

## CHAPTER-2

# ATTEMPTS AND EFFORTS MADE BY THE DISCOVERY CLAIMANT

This chapter details the attempts and efforts made by the discovery claimant, Ramesh Varma (*India*), from 2007 to the publication of this book in 2024, to raise awareness among the general public and the scientific community about his discoveries in astronomy (*formation and working mechanism of celestial bodies, particularly the solar system*) and physics (*true physical and materialistic particle properties of rays such as light and other kinds, and the invisible states of matter*).

## 1. Press conferences held thrice in Chandigarh to raise global awareness.

Some of the press reports (*publications*) have been exhibited below:

### (i) Latest 3rd Press Conference on Astronomy:

The 3rd Press Conference was held by the Discovery Claimant at Press Club, Chandigarh (India) on December 15, 2015, for the release of an astronomy book in Hindi titled: "वैज्ञानिकों की दिमागी समझ (जो गलत दिशा में है) का पोल-खोल अभियान! सन 2015," which translates to "The campaign to expose the flawed (*misguided*) intellectual understanding of scientists! Year 2015."

<b>1.</b>	<b>Dainik Bhaskar (Chandigarh), Tuesday, December 15, 2015 (Page-4)</b>	<b>2.</b>	<b>Amar Ujala (My City Chandigarh), Tuesday, December 15, 2015 (Page-5)</b>

## ‘वैज्ञानिकों की दिमागी समझ का पोल खोल अभियान’ से गलत साबित की वैज्ञानिकों की थ्योरियां

चंडीगढ़, 14 दिसम्बर (आशेष): पंजाब यूनिवर्सिटी से विज्ञान के 1966 के स्नातक रहे उद्यमी रमेश वर्मा ने अपनी नई पुस्तक ‘वैज्ञानिकों की दिमागी समझ का पोल खोल अभियान’ का विमोचन सैक्टर-27 प्रेस क्लब में किया। किताब के जरिए उन्होंने ग्रहों के चलन पर अपनी और दूसरे वैज्ञानिकों की नई खोजों के आधार से 400 वर्षों से मानी जा रही खगोल और किरणों की थ्योरियों को गलत साबित किया है। उनका मकसद है कि साइंस स्टूडेंट्स को अपनी खोजों की जानकारी देकर उन्हें निर्णय लेने के काबिल बनाया जाए। रमेश वर्मा ने बताया कि 17वीं सदी में न्यूटन के समय यह समझा और माना जाता था कि ग्रह केंद्र प्रसारक



परमजीत उद्यमी व लेखक रमेश वर्मा जानकारी देते हुए। (परमजीत) बल के कारण से सूर्य से दूरी बनाए था कि सूर्य से प्रकाश और गर्म ऊर्जा हो निकलती है जो भीतिकहीन है।

अब नई खोजों से यह जाना जा चुका है कि सूर्य से जो भी कुछ निकलता है वह उसे धकेल देता है। इस कारण ग्रह, सूर्य से कुछ दूरी पर हैं। एक और तीसरा कारण भी ग्रहों को सूर्य से दूरी पर रखता है, वह है सूर्य और ग्रह की अपनी छोटी हुई भौतिक किरणों की आपसी धकेल, जो एक ही तरह के चुम्बकीय ध्रुवों से निकलती हुई चुम्बकीय किरणों की तरह एक दूसरे चुम्बक को दूरी पर धकेलती हैं। रमेश वर्मा ने एक सौरमंडल का मॉडल बना कर यह भी समझाया कि सूर्य के घुमने से जो भौतिकीय किरणें निकलती हैं वो मुझावदार रास्ता अपनाती हैं जिसके कारण से सौरमंडल का चलन होता है।

## नि ‘वैज्ञानिकों की दिमागी समझ का पोल खोल अभियान!’

जागरण संवाददाता, चंडीगढ़ : पंजाब विश्वविद्यालय के विज्ञान स्नातक व उद्यमी रमेश वर्मा ने खगोल विज्ञान और ग्रहों व किरणों से जुड़ी नई खोजों और पुरानी मान्यताओं को नकारते तथ्यों के बारे में ‘वैज्ञानिकों की दिमागी समझ का पोल खोल अभियान’ शीर्षक से एक पुस्तक लिखी है। सोमवार को यहां प्रेसवार्ता में उद्यमी रमेश वर्मा ने कहा कि ग्रहों के चलन के बारे में अपनी और दूसरे वैज्ञानिकों की नई खोजें 400 वर्षों पुरानी खगोल और किरणों की थ्योरियों को गलत साबित कर रही हैं।

उन्होंने कहा कि पुस्तक हिंदी भाषा में प्रकाशित करने के पीछे उनका लक्ष्य विज्ञान के विद्यार्थियों को अपनी खोजों की जानकारी दे कर उन्हें निर्णय लेने के काबिल बनाना है ताकि वह इस नई जानकारी को सामने रखते हुए जान सकें कि जो उनको अब पढ़ाया जा रहा है वो कितना सही व गलत है। पुस्तक में उल्लेखित जगाने वाले विषयों पृथ्वी कैसे लट्टू की भाँति घूमती है, ग्रह कैसे और क्यों किसी अलग दिशा में घूमते हैं, ग्रहों का परिक्रमण

### खगोल विज्ञान और किरणों के विषयों पर नई पुस्तक

चक्रार क्यों है, ग्रहों का धुरी क्यों क्यों है, सभी के सभी यह एक ही तल पर क्यों है? इनसे अलावा यह भी बताया कि खंडमा कभी पृथ्वी के बिलकूल पीछे आता हुआ छोटा ग्रह था। वर्मा ने बताया कि ग्रहों की औसत घनत्वता जोकि ग्रह चलन नियमों से गणना करके जानी गई है वो सही नहीं है। वैज्ञानिक हैनरी कैवेंडिश ने सन् 1798 में अपने घर की प्रयोगशाला में प्रयोग से पृथ्वी का भार (यानी औसत घनत्वता) जाना था, जो सही है। इस जानकारी के बाद में चाको के सभी ग्रहों की औसत घनत्वता गणना करके जानी गई थी। तब वैज्ञानिक यह नहीं जानते थे कि सूर्य से जो भी कुछ निकलता है वह ग्रहों पर धकेल जाता है, किसे वैज्ञानिक अब सोलर विंड के नाम से जानते हैं। ग्रह बुध हमारी पृथ्वी का सिर्फ 1/18 भाग है और वह सूर्य के बहुत समीप है।

5. Satya Swadesh (Himachal), Tuesday, December 15, 2015 (Page-5)

एक महत्वपूर्ण सरकार का कार्यक्रमाल निकालना। सोमवार सुबह से मुलाकात की मांग की।

## वैज्ञानिकों की दिमागी समझ का 'पोल खोल अभियान'

**चंडीगढ़**  
**एवेनल क्लब**

अपने आप को सिटीजन वैज्ञानिक बनाने हुए एक उद्यमी, रमेश वर्मा, जो कि पंजाब यूनिवर्सिटी चंडीगढ़ से विज्ञान के स्नातक हैं, यहाँ के चलन पर अपनी नई खोजों और ढांचों, जो कि कई वर्षों के प्रयास और जनकारी पर आधारित है, को लेकर आर्थिक उत्सुक हैं।

उन्होंने यहाँ के चलन पर अपनी और दूसरे वैज्ञानिकों की नई खोजों के आधार से 400 वर्षों से मानी जा रही बहुत सी खगोल और किरणों की व्यौरियों को गलत साबित किया है।

सालों से वैज्ञानिकों, संस्थाओं और विज्ञान जर्नलों, जो खगोल विषय से जुड़े हैं, की सम्झाने की नाकामयाब कोशिशों और हर प्रकार के प्रयासों के बाद रमेश वर्मा अब अपनी पुस्तक, जो हिंदी भाषा में है, लेकर आये हैं। अपनी पुस्तक 'वैज्ञानिकों की दिमागी समझ (जो गलत दिशा में है) का पोल खोल अभियान में लेखक ने बहुत सरलता से व्यवस्था की है कि पृथ्वी कैसे लट्टु की शक्ति धूमती है, यह कैसे और क्यों किसी अलग दिशा में घूमते हैं, यहाँ का परिचयण चकराव क्यों है, यहाँ का घूरी कोण क्यों है, सभी के सभी यह एक ही तल पर क्यों है? इन के इलावा यह भी बताया कि चंद्रमा कभी पृथ्वी के बिल्कुल पीछे आता हुआ छेदा वह था। लेखक ने खास तौर से चुनौती दो खोजों पर दी है, यहाँ की सूर्य से दूरी का कारण और यहाँ की यह चलन नियमों से गुणना करके जानी गई औसत घनत्वता।

रमेश वर्मा ने एक सौरमंडल का मॉडल बना कर वह भी सम्झाया कि सूर्य के घूमने से जो भौतिकीय किरणों निकलती हैं वो मुड़बबदार बनना अपनाती हैं जिसके कारण से सौरमंडल का चलन होता है।

मॉडल से बहुत आसानी से सूर्य और ग्रहों का चलन समझा गया है, जिसे एक सम्झदार आम नागरिक भी आसानी से समझ सकता है। इस मॉडल से विज्ञान के विद्यार्थी तो एकदम सम्झ जायेंगे कि क्या सच है।

पुस्तक 'वैज्ञानिकों की दिमागी समझ (जो गलत दिशा में है) का पोल खोल अभियान में लेखक ने बहुत सरलता से व्यवस्था की है कि पृथ्वी कैसे लट्टु की शक्ति धूमती है, यह कैसे और क्यों किसी अलग दिशा में घूमते हैं, यहाँ का परिचयण चकराव क्यों है, यहाँ का घूरी कोण क्यों है, सभी के सभी यह एक ही तल पर क्यों है? इन के इलावा यह भी बताया कि चंद्रमा कभी पृथ्वी के बिल्कुल पीछे आता हुआ छेदा वह था। लेखक ने खास तौर से चुनौती दो खोजों पर दी है, यहाँ की सूर्य से दूरी का कारण और यहाँ की यह चलन नियमों से गुणना करके जानी गई औसत घनत्वता।

रमेश वर्मा ने एक सौरमंडल का मॉडल बना कर वह भी सम्झाया कि सूर्य के घूमने से जो भौतिकीय किरणों निकलती हैं वो मुड़बबदार बनना अपनाती हैं जिसके कारण से सौरमंडल का चलन होता है।

मॉडल से बहुत आसानी से सूर्य और ग्रहों का चलन समझा गया है, जिसे एक सम्झदार आम नागरिक भी आसानी से समझ सकता है। इस मॉडल से विज्ञान के विद्यार्थी तो एकदम सम्झ जायेंगे कि क्या सच है।

**'खेल त सांस्कृतिक कार्यक्रमों केके काँछी डे के मेन्सू में'**

6. Punjabi Jagran, Jalandhar (Chandigarh/Mohali Jagran), Tuesday, December 15, 2015 (Page-4)

ਇਸ ਪੱਠਰ ਵਿੱਚ ਇੱਥੇ ਹੈ ਕਿ ਅਧਿਆਪਕਾਂ ਕੁਰਦੀਪ ਕੌਰ ਨੂੰ ਬਲਾਕ ਨੰਬਰ 229, 230 ਅਤੇ ਸਿੱਕਰਤ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਨੇ ਡਿਪਟੀ ਕਮਿਸ਼ਨਰ ਨੂੰ ਇਸ ਕਰਮਚਾਰੀ ਵਿਰੁੱਧ ਅਨੁਸ਼ਾਸਨੀ ਕਰਵਾਈ ਪੰਜਾਬ ਅਧਿਆਪਕ ਸੰਘ ਦੇ ਆਗੂ ਸੋਮਾ ਕੌਰ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਬਾਕੀ ਸਾਰੇ ਕਰਦੀ

## ਖੇਜਾਂ ਸਬੰਧੀ ਗ਼ਲਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ : ਵਰਮਾ

**ਐਸ ਸਿਦਰ, ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ**

ਇਸ ਵਿੱਚ ਏ ਰਾਵਾ ਨਹੀਂ ਹਨ, ਸਚਮੁੱਚ ਹੀ ਵਿਗਿਆਨ ਨੇ ਬਹੁਤ ਤਰੱਕੀ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਆਧੁਨਿਕ ਸਮੇਂ ਇੰਟਰਨੈੱਟ ਤੇ ਮੋਬਾਇਲ ਦੀ ਸਹੂਲਤ ਨੇ ਪੂਰੇ ਸੰਸਾਰ ਨੂੰ ਯਕ ਬੰਦੇ ਦੀ ਮੁੱਟੀ ਵਿੱਚ ਬੰਦ ਕਰ ਦਿੱਤਾ ਹੈ, ਹੁਣ ਤਾਂ ਬੰਦ ਤੋਂ ਵੀ ਅਗਾਂਹ ਮਿਗਲ ਕ੍ਰਾਹਿ 'ਤੇ ਜਾ ਪੁੱਜੇ ਹਨ ਜਿੱਥੇ ਨਵੀਂ ਚੁਣੀਆਂ ਵਾਸਾਉਟ ਦੇ ਯਤਨ ਹੋ ਰਹੇ ਹਨ। ਇਹ ਵਿਗਿਆਨ ਦਾ ਹੀ ਆਲੋਚਿਕ ਕ੍ਰਿਸਮਾ ਹੈ, ਪਰ ਦੂਸਰੇ ਪਾਸੇ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਦੇ 70 ਸਾਲਾ ਵਿਗਿਆਨੀ ਰਮੇਸ਼ ਵਰਮਾ ਦਾ ਵਾਅਦਾ ਹੈ ਕਿ 'ਖਗੋਲ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਵੱਲੋਂ ਬਹੁਤ ਸਾਰੀਆਂ ਖੇਜਾਂ ਦੇ ਮਾਮਲੇ ਵਿੱਚ ਹੁਣ ਤੱਕ ਤੱਕੇਬਾਜ਼ੀ ਰਾਹੀਂ ਸਹੀ ਜਾਣਤ ਕਰਕੇ ਗ਼ਲਤ ਜਾਣਕਾਰੀ ਹੀ ਦਿੱਤੀ ਜਾਂਦੀ ਰਹੀ ਹੈ, ਜਦਕਿ ਅਸਲੀਅਤ ਤੁਝ ਹੋਰ ਹੈ। ਉਸਨੇ 'ਸੰਸਾਰ ਦੇ ਖਗੋਲ ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ' 'ਤੇ ਇਹ ਇਲਥਾਮ ਅੱਜ ਇੱਥੇ ਸੈਕਟਰ-27 ਸਥਿੱਤ ਪ੍ਰੈਸ ਕਲੱਬ ਵਿੱਖੇ ਇੱਕ ਪੱਤਰਕਾਰ ਸੰਮੇਲਨ ਦੌਰਾਨ ਆਪਣੀਆਂ ਖੇਜਾਂ 'ਤੇ ਅਧਾਰਤ ਇੱਥੇ ਪ੍ਰਸਤੁਤ ਨੂੰ ਰਿਸ਼ੀਜ ਕਰਨ ਸੌਕੇ ਲਗਾਏ। ਉਨ੍ਹਾਂ ਆਪਣੀ ਇਸ ਕਿਤਾਬ ਦਾ ਨਾਂਅ ਹੀ 'ਵਿਗਿਆਨੀਆਂ ਦੀ ਦਿਮਾਗੀ ਸਮਝ (ਜੋ ਗ਼ਲਤ-ਦਿਸ਼ਾ ਵੱਲ ਹੈ) ਦਾ ਪੋਲ-ਖੋਲ ਅਭਿਆਨ' ਰੱਖਿਆ ਗਿਆ ਹੈ। ਆਪਣੀਆਂ ਖੇਜਾਂ ਨੂੰ ਪੁਸ਼ਟਤਾ ਤੇ ਸਹੀ ਪੁਸ਼ਟਿਤ ਕਰਨ ਲਈ ਉਨ੍ਹਾਂ ਨੇ ਬਕਾਇਦਾ ਇੱਕ ਸੈਟ ਵੀ ਲਗਾਇਆ,

ਸਿੱਕਰ-27 ਸਥਿੱਤ ਪ੍ਰੈਸ ਕਲੱਬ ਵਿਖੇ ਇੱਕ ਪੱਤਰਕਾਰ ਸੰਮੇਲਨ ਦੌਰਾਨ।

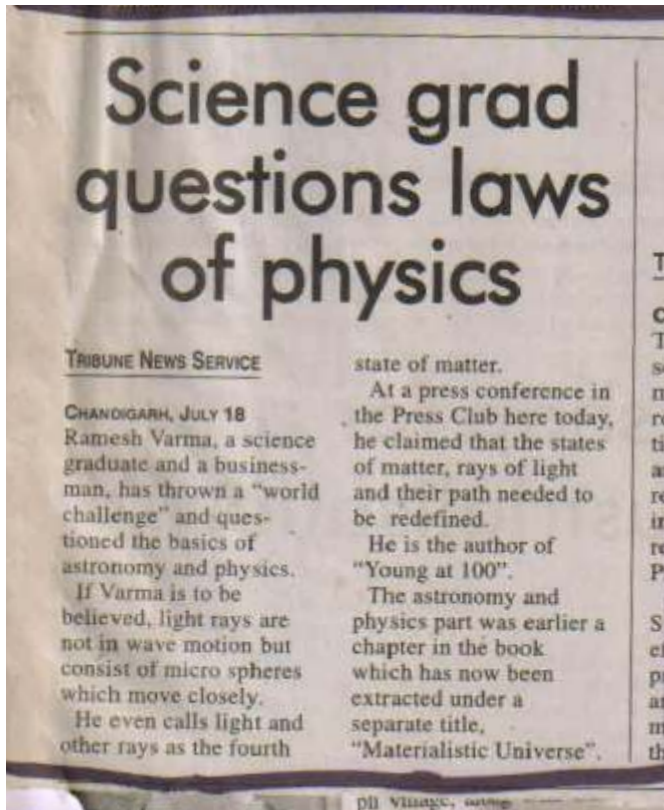
ਪੰਜਾਬੀ ਜਗਰਨ

ਜਿਸ ਰਾਹੀਂ ਉਸਨੇ ਪੱਤਰਕਾਰਾਂ ਵੱਲੋਂ ਪੁੱਛੇ ਗਏ ਸੁਆਲਾਂ ਦੇ ਜੁਆਬ ਪ੍ਰੋਟੋਟਾਈ-ਤਰਕ ਰਾਹੀਂ ਦੇਕੇ ਤਸਲੀ ਕਰਾਉਣ ਦੀ ਕੋਸ਼ਿਸ਼ ਕੀਤੀ ਗਈ। ਸੰਨ 1966 ਵਿੱਚ ਸਰਕਾਰੀ ਕਾਲਜ ਚੰਡੀਗੜ੍ਹ ਵਿੱਚ ਬੀਐਸਸੀ ਪਾਸ ਕਰਕੇ ਨਿਕਲੇ। ਰਮੇਸ਼ ਨੇ ਸੰਨ 1991 ਵਿੱਚ ਆਪਣੀਆਂ ਖੇਜਾਂ ਦਾ ਸਿਲਸਿਲਾ ਕੀਤਾ। ਹੁਣ ਤੱਕ ਉਸਨੇ ਆਪਣੀਆਂ ਖੇਜਾਂ ਰਾਹੀਂ ਬਹੁਤ ਕੁਝ ਅਜਿਹਾ ਲੱਭਣ ਵਿੱਚ ਸਫਲਤਾ ਹਾਸਲ ਕੀਤੀ ਹੈ। ਇੱਕ ਜੁਆਲ ਦਾ ਉੱਤਰ ਦਿੰਦਿਆਂ ਰਮੇਸ਼ ਨੇ ਕਿਹਾ ਕਿ ਮੈਂ ਆਪਣੀਆਂ ਕੀਤੀਆਂ ਖੇਜਾਂ ਬਾਰੇ ਡਾਰਡ ਸਰਕਾਰ ਤੋਂ ਇਲਾਵਾ ਅੰਤਰਰਾਸ਼ਟਰੀ ਵਿਗਿਆਨ ਆਫ ਸਪੇਸ ਤੋਂ ਰਿਸਰਚ ਨਾਲ ਵੀ ਕਈ ਵਾਰ ਇੱਥੇ ਜੁੱਕਾ ਹਾ ਪਰ ਕਦੇ ਨੈਸ ਜੁਆਬ ਨਹੀਂ ਮਿਲਿਆ।

**(ii) Previous 2nd Press Conference on Astronomy:**

The 2nd Press Conference was held by the Discovery Claimant at Press Club, Chandigarh (India) on July 18, 2007, over the subject of astronomy.

**1. Chandigarh Tribune, Thursday, July 19, 2007 (Page-3)**



**2. Punjab Kesari (Chandigarh Kesari), Thursday, July 19, 2007 (Page-4)**



3.

Amar Ujala, Thursday, July 19, 2007 (Page-10)

## पंचकूलावासी ने खगोल शास्त्रियों को दी चुनौती

चंडीगढ़। सूर्य की किरणें जमीन पर सीधी पड़ने की बजाए घूमती हुई चलती हैं। किरणों की इस हरकत से ही ग्रह-नक्षत्रों सहित पृथ्वी भी अपनी कक्षा में घूमती है। खगोल शास्त्रियों का यह कहना कि हजारों वर्षों से ग्रह-नक्षत्र एक तैसी चाल से घूम रहे हैं, गलत है। पंचकूला के सेक्टर-8 निवासी रमेश वर्मा का दावा है कि भौतिकविदों द्वारा पढ़ाई जा रहे थ्योरी उतनी तक संगत नहीं है। उनके अनुसार, विज्ञान के विद्यार्थियों को सही ज्ञान नहीं दिया जा रहा है।

उनका दावा है कि सूर्य की किरणें कणों के रूप में कतारबद्ध ढंग से घूमती हुई पड़ती हैं। वर्षों के अपने शोध को उन्होंने किताबों की शक्ल में तैयार करने के बाद अब इंटरनेट पर डाल दिया है। वर्मा ने खगोल शास्त्रियों को चुनौती दी है कि या तो उनके शोध को प्रमाणित माना जाए अथवा आपत्ति जताई जाए।

बुधवार को प्रेम क्लब में पत्रकारों से बातचीत के दौरान, पेशे से ट्रैफिक सेफ्टी प्रोडक्ट्स का कारोबार करने वाले पंचकूला के सेक्टर-8 स्थित मकान नंबर 852 निवासी रमेश वर्मा ने बताया कि विज्ञान से ओएससी की पढ़ाई करने के बाद से ही उन्होंने खगोल विज्ञान में रुचि लेते हुए स्वास्थ्य समेत अन्य बातों पर शोध जारी रखा है। उन्होंने बताया कि अपनी पुस्तक बंग एट 100 में उन्होंने अपनी बात को स्पष्ट करने का प्रयास किया और दुनिया भर की जानी मानी संस्थाओं से प्रमाणिकता के लिए पुस्तक को भेजा गया, लेकिन कहीं से कोई जवाब नहीं मिला। टाटा रिसर्च इंस्टीट्यूट के अलावा जेनेवा स्थित एस्ट्रॉनॉमी क्लब में भी पुस्तक की प्रतियां भेजी गईं, लेकिन कोई उत्तर नहीं आया। अब अपने पक्ष को प्रमाणित करने के लिए उन्होंने इंटरनेट पर सभी बातों को डाल दिया है, जिससे दुनिया के किसी भी कोने में बैठे कोई भी व्यक्ति चाहे तो उनके कथन से सहमति या असहमति जता सके। उनका वेबसाइट पता है, डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.न्यूटनयूजीएम.कॉम है। एक सवाल के जवाब में वर्मा ने कहा कि पुस्तक को प्रकाशित करने को जब कोई नहीं मिला तो खुद ही न्यूटन यूजीएम इंटरनेशनल पब्लिशर्स के नाम से पुस्तक छपवाई गई है। यूजीएम का अर्थ युनिफार्म गैविटी एक्सपोजर एंड मसाज है।

4.

Thursday, July 19, 2007

Some other Newspapers and Periodicals have also published their reports in languages Hindi, Punjabi and English, which need no exhibits.

**(iii) Previous 1st Press Conference on Astronomy and Health (Human Ageing Process Slow Down):**

The 1st Press Conference was held by the Discovery Claimant at Press Club, Chandigarh (India) on April 9, 2007, for the release of a book on astronomy (as the 3rd Volume) titled: "MATERIALISTIC UNIVERSE- preliminary," along with a health book on the human ageing process titled "YOUNG AT 100."

**1. Chandigarh Tribune, Tuesday, April 10, 2007 (Page-2)**



2.

Hindustan Times (HT City), Tuesday, April 10, 2007 (Page-3)



HT Photo

**YOUNG AT 100:** Ramesh Varma challenges ageing in his book.

## New anti-ageing solution!

Nonika Singh

**W**atch TV upside-down  
 ■ Forsake the glass of filtered water for a chlorinated one (of course within permissible limits!)  
 ■ Burning calories on a treadmill has means little, opt for jumping, skipping, walking or running.  
 ■ Vegetables with worms are better than pesticide-sprayed drugs.  
 'Crazy' observations of a 'nutty' mind! Hold it. Ramesh Varma, the science graduate and businessman who upholds these assertions in his three-part book *Young At 100* (released at Chandigarh Press Club on Monday) insists his books are scientifically detailed and research based.

Okay, sample his take on ageing & the upside-down posture. Says he: "We age due to gravity & once we can modulate gravity by a uniform gravity exposure and massage (UGEAM), ageing will be reversed". Well, he's even devised machines facilitating the posture. He asserts it has tremendous anti-ageing benefits. He agrees ageing is natural, but who wouldn't want to be young at 100!

The *Ze young*' bug bit him back in 1988 when his mother told him: "You've grown old". The remark set him thinking and acting on how to arrest the damage. Today, as he looks years younger than his biological age, he reveals he's been his own guinea pig. While many of his observations are credible common sense conjectures, many challenge the existing law of astronomy too. For instance, he talks about the fourth state of matter, while the scientific world already acknowledges only three. Rather he claims to have new postulates on varied issues like how planets affect life, does rebirth exist and are there ghosts in this world and many more such 'weird' questions?

So will the scientific fraternity accept his findings? He smiles confident: "I have left no escape route open. Any doubts, any aspersions about what I am theorizing, will find an answer in the pages of the book itself," he says. Actually copies of the three-volume book, which've already been sent to noted scientists are targeted at the scientific community alone. A lay reader's edition will follow once he has validation of the 'rational' scientific world. Till then follow his prescriptions at your own discretion. Anyways, he cautions that UGEAM is not for the weak, disabled & obese.

**Astronomy**

3.

Tuesday, April 10, 2007

Some other Newspapers and Periodicals have also published their reports in languages Hindi, Punjabi and English, which need no exhibits.

## 2. Publication and distribution of books and leaflets to relevant parties.

It is a long list of parties that would be posted on the website.

## 3. Display of important discovery claims through large hoardings along roadsides at premises 'True Astronomy and Sciences'.

Large hoardings, as shown below, were installed at village Jallah (*District-Panchkula*), Haryana, INDIA, along the roadside (*Chandimandir to Morni Road*) in the year 2019 and continue to exist until the publication year (2024) of this book.

125X750CM

खोजी रमेश वर्मा का 2007 से दावा; ISRO ने कहा कि खोज को Science Journal में छपवाएँ।  
**सूर्य अपनी भौतिकीय किरणों से घूमता है**

भौतिकीय किरणें आगे को बढ़ते समय पीछे को धकेल देकर सूर्य को घुमाती हैं। और अधिक जानकारी के लिए वेबसाइट से पढ़िए।  
नोट: वैज्ञानिक गलत जानकारी के कारण बच्चों (विद्यार्थियों) को गलत पढ़ा रहे हैं।

125X1750CM



**SUN DOES NOT ROTATE**  
DISCOVERY CLAIM (2007) BY RAMESH VARMA THAT **RAYS\*\* ROTATE**

**AUTOMATIC\*** BY THE CONSERVATION OF ANGULAR MOMENTUM, WHICH IT HAS GOT AT ITS FORMATION AS THE WORLD UNDERSTANDS  
**THE SUN** \*\* IT IS THE MATERIALISTIC PARTICLES CURVED RAYS ALONG WITH SOLAR EJECTS, WHICH BY THEIR BACK THRUST ROTATE THE SUN

**THE MOON WAS** 24"x197"  
**A SMALL PLANET** 24"x205"  
**FOLLOWING THE** 24"x202"  
**YOUNG EARTH** 24"x184"

TOTAL LENGTH 24"x788"



## 4. Posting of discovery claims on YouTube;

(i) Reason behind rotation of the Sun (Trailer) uploaded on 21/08/2019

Title: Materialistic particles curved rays rotate the Sun.

(ii) Reason behind rotation of the Sun (Full video) uploaded on 19/08/2019

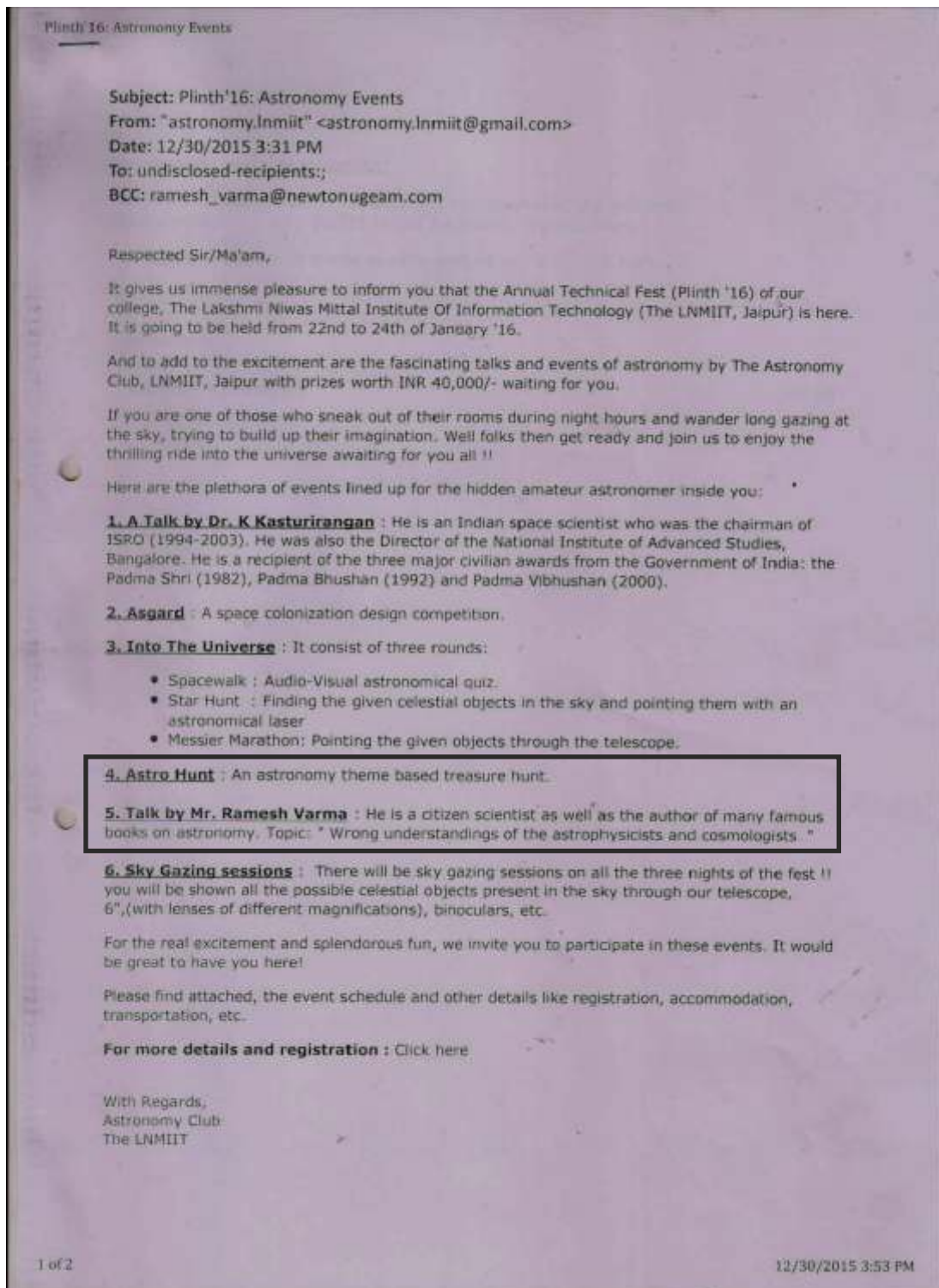
Title: New Discovery: Rotation to Sun by its materialistic particles rays.

(iii) Origin of the Moon and its capture from solar orbit by the Earth (Full video) uploaded on 24/02/2020

Title: Moon & Earth were adjacent planets. How did the Earth capture it due to relative slow orbital motion

## 5. Lectures given to students in various institutions.

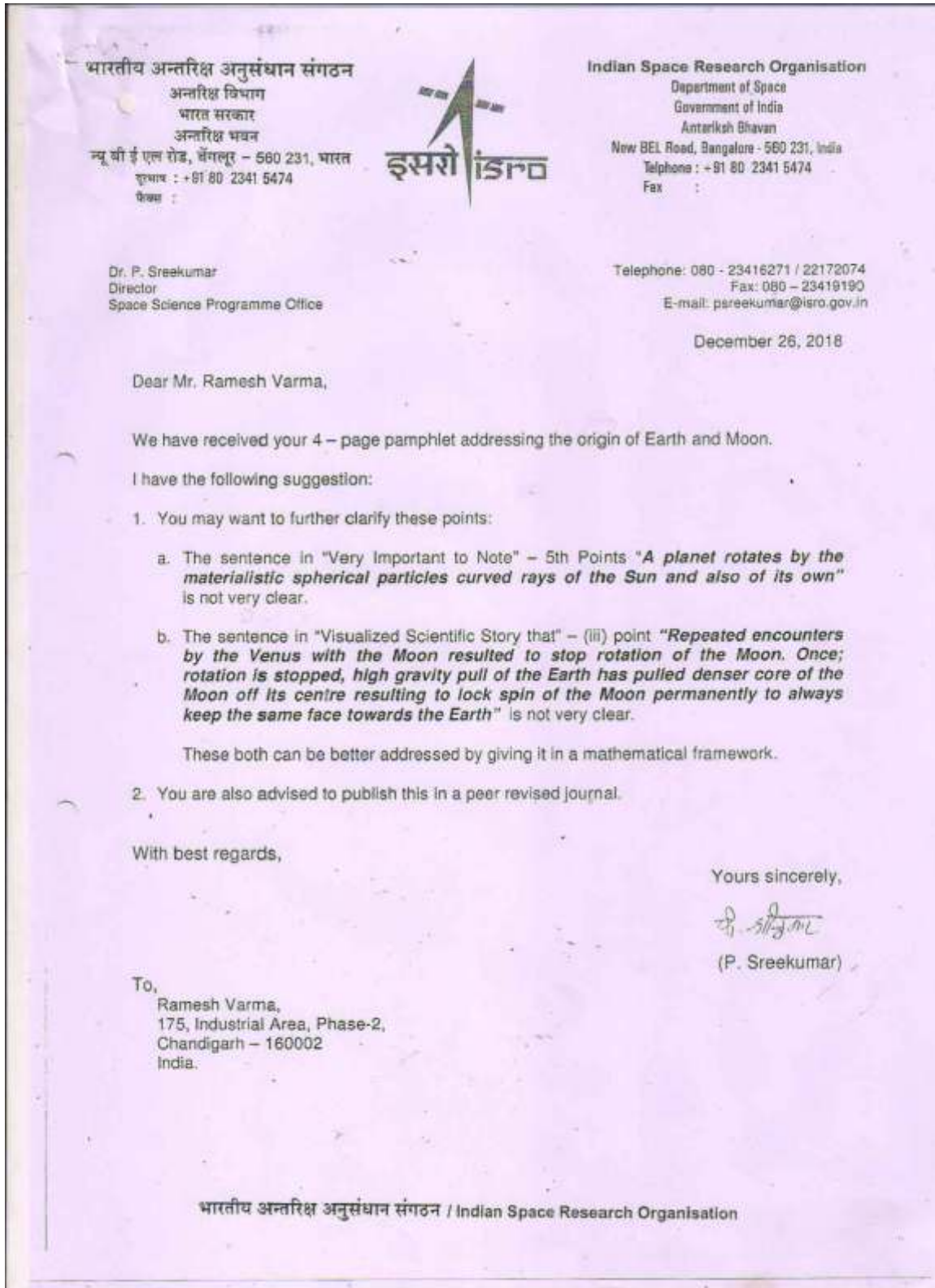
A lecture was given on January 23, 2016, covering discovery claims pertaining to the subject of Astronomy at The LNM Institute of Information Technology (LNMIIT), Jaipur.



## 6. Writing thousands of letters to relevant parties.

It is a long list of parties that would be posted on the website.

A very important response was received from ISRO (*India*) regarding the origin of the Moon and its capture by the Earth, which has been exhibited below:



## 7. Sending thousands of emails to relevant parties.

It is a long list of parties that would be posted on the website.

## 8. Personal contact with some concerned individuals

During the very initial stages of the discovery claim, the Author attempted to meet some Concerned individuals personally.

After receiving no proper response from them, the Author decided not to meet any Concerned individuals personally until he had attempted all other means to make the world aware of his discovery claims.

Below is the text detailing the response from some Concerned individuals with whom the Author met.

### (i) Meeting with a Professor of the subject 'Physics'.

The Author approached a Professor of Physics (*holding a top academic and official position*) to explain his claim that materialistic rays spin and provide orbital motion to the planets. At the start of the explanation, the Professor asked the Author if he could prove this. The Author responded that it could not be proven in the laboratory, but rather required the observation of the solar system as if it were a vast laboratory. He further argued that not every subject falls under the purview of the laboratory. The Professor dismissed the claim, stating that if it couldn't be proven in the laboratory, it wasn't worth his time.

**The Author questioned whether it was foolish to believe that everything or every phenomenon could be proved in the laboratory.**

**Under such a viewpoint, how can physicists understand the materialistic properties of light and other kinds of rays?**

### (ii) Meeting with a Professor of the subject 'Astronomy'.

During the initial stages of the discovery claim, when meeting with a Professor of Astronomy at a reputable university, the Professor declined to verify the claim, stating he was too busy with his project on the Moon for the next six months. Despite the Author's assertion that the discovery pertained to the Moon, the Professor refused to engage. After six months, the Author sent numerous letters, but received no response.

### (iii) Meeting with some professors of the subjects Physics and Astronomy at another reputable university in Punjab state.

The Author met with four Professors, briefly explaining his discovery claims and handing over related papers. However, as the Professors were not familiar with the discovered facts, no proper discussion took place. Subsequently, the Author sent several letters to them, receiving no response.

### (iv) Meeting with a Vice Chancellor of a reputable university.

Author met a Vice Chancellor of the University of Repute through his relative, who had good relation with the Chancellor.

He greeted well but when he asked that how we have come; on telling about the discovery claims, he started disposing of files and other papers from his table and has seldom given a look on us.

After 4-5 minutes, he told us that papers related to the subject to be given to him, he will forward it to the Concerned Professor for verification. After given the papers, we left.

After some months, some letters were posted to ask for the response; Author got no response.

### (v) Meeting with the Editor-in-Chief of a reputable English Newspaper.

Author along with his friend, who was well known to the Editor-in-Chief went to his house with an aim to get publish the discovery claims.

During discussion, Editor-in-Chief told that they do not have the Scientists, so it is not possible to publish the claims, though it may be correct.

Author further told the Editor-in-Chief that due to wrong knowledge persisting from centuries a cycle of wrong knowledge had developed; students on becoming Teachers/Professors repeat the same. This cycle of wrong knowledge only the press (*Newspaper*) can break to make aware the World that what is correct.

Editor-in-Chief suggested breaking the said cycle that Author must do PhD or achieve higher academic qualification to get into the said ring of cycle to smash it.

**Note:** Editor-in-Chief's suggestion is appealing but it was/is not possible for the Author because to pass PhD or higher academic qualification, Author cannot sit in the class room, where wrong teaching is being given to the students.

**(vi) Meeting with the Minister of Science and Technology (Government of India).**

Author along with his schoolmate friend went to the house of the Minister with an aim to get verify discovery claims from the Concerned Ministry or Department of Physics and Astronomy. After discussion in brief of some discovery claims, Author handed over some papers related to the discovery claim for verification.

After few days ministry over Science and Technology with the Minister was transferred to another ministry with the result nothing positive was achieved.

**9. Publication (as advertisements) of some discovery claims in certain issues of the renowned magazine 'Astronomy' (USA).**

The following discovery claims advertisements (numbering 10) in Astronomy magazine fell victim to the aforementioned snags, resulting in no editor giving any attention to the discovery claims. (The advertisement material was not for the sale of a product, which the editors do not require; it was for the rectification of wrong knowledge regarding the subject of Astronomy. The author did not anticipate such a response from the editors; it astonished him).

**1. Issue February 2020 (Page-8)**

**Rotation of the Sun**  
Get reward\* \$ 50,000

If Discoverer Ramesh Varma (India) would have been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all the Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

By proving the new discovery claim (2007) over rotation to the Sun (by the materialistic particles curved rays) as wrong and false. The Sun releases a continuous flow of particle rays (light and other kinds of the rays) which are materialistic in nature. Outgoing materialistic particles curved rays along with other solar ejects put back thrust over every particle of the Sun which encircles the Sun's particle matter faster (or rotates the Sun faster) at its equator than near to its Poles. The same reason of back thrust by the rays over every particle of the Sun also keeps the Sun a perfect sphere and does not allow it to become oblate in spite of its fast rotation. The discovery claim disapproves centuries old understanding that the Sun rotates by the conservation of angular momentum.

Further, gravity is not the only factor which governs formation and working mechanism of the celestial bodies as the World understands; it is the backward thrust over the body by the outgoing materialistic particles curved rays and forward thrust by the rays over the celestial bodies along with the factor gravity which does the said job.

The entire Universe is materialistic; no pocket of the Universe is with absolute nothing. Whatsoever trillions and trillions of stars release in the form of invisible matter by losing their mass in their respective galaxies or into the space that all is matter to be called as white matter which has been falsely understood by the Scientists as dark matter.

Acceptance of unique materialistic particle properties of the rays as discovered and claimed would result to replace almost all theories, hypotheses, postulations and speculations over the subjects Astronomy and Physics (Rays and states of the matter) with the scientific facts.

Read in detail the discovery claim on website:  
[www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)  
Also on YouTube  
**Rotation to the Sun by the materialistic particle rays**  
\*Reward: Terms & Conditions apply, see website.

**2. Issue March 2020 (Page-6)**

**New Discovery: Origin of the Moon**  
Co-formation and capture hypothesis understood by linking analysis of rocks brought from the Moon makes sense that how did the Earth capture the Moon.

If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all the Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

Scientists of the 21st century have all the data and information required to know origin of the Moon correctly, but they rely on conclusion from super computers than their brains thus they are far off from understanding below stated fact.

**Where and how did the Moon form?** Solar planets have formed by the same process as the scientists at Hubble Telescope have discovered. In space planets form by clubbing together particles of the disk of dust and gases around the protostar. Billion years ago young Earth and young Moon formed the same way and young Moon was a small planet in between the young Earth and the young Mars but was much closer to the young Earth.

**Why Moon is less dense than the Earth?** Matter of the disk got arranged density wise in flat rings by the two factors (1) gravity pull of the Sun and (2) forward thrust over disk particles by outgoing materialistic particles curved rays of the Sun along with other solar ejects; denser/bigger near to the Sun and lighter/finest far away. Due to the said new discovered fact and formation of young Earth and young Moon from adjacent rings or segments of disk; density of the Earth is greater than that of the Moon besides greater gravity factor of Earth due to compactness of matter on being bigger in size than the Moon.

**Iron and isotope factors:** Iron is denser than other abundantly available elements. Due to the particles density wise arrangement factor; Moon has lesser iron content than the Earth. Isotopes of Moon and Earth resemble being formed from the adjacent segments of the disk.

**How did the Earth Capture the Moon?** During era of its capture; planets were growing bigger by gaining mass from the disk, so due to gain in mass they were shortening their orbital distances. Mutual gravity attraction of the young Moon and young Earth increased and distance between young Moon and young Earth at alignment with Sun decreased. A climax came at critical gravity attraction of young Earth resulting to derail the young Moon from its solar orbit to adopt new orbital path around the young Earth. Young Earth captured the young Moon with ease at relative orbital speed (i.e., difference between orbital speed of the young Earth and young Moon, which was much slower than their orbital speeds).

**What had happened at its capture?** Young Earth got tilted to its axis by the materialistic particles curved rays of the Sun. The Earth and the Moon together (clubbed formation) came closer to the Sun due to their clubbed gravity.

**Read in detail 'Origin of the Moon'** and answers of most mysteries and riddles over the Moon from website [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com) Also see on YouTube: (1) Moon and Earth were adjacent planets and how did the Earth capture it due to relative slow orbital motion? (2) Rotation of the Sun by the materialistic particles curved rays (It results to disapprove academic knowledge that Sun rotates by the conservation of angular momentum).

**3. Issue April 2020 (Page-63)**

Get reward\* \$ 50,000 by proving that how a densest mass could exist in space surrounded by absolute nothing? Big Bang; to which extent is it correct?

If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all the Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

When an influential Scientist of the past era or of the present triggers some new information (discovery claim); mostly it is blindly followed by the concerned and with the passage of time it gets well approved stamp and becomes hard to challenge. Please wake up to understand what should be correct.

**Could a densest mass (mass of the entire Universe) equivalent to size of a peanut exist, if it is surrounded by absolute nothing?** No physical matter of any size and of any density can exist, if it is surrounded by absolute nothing. So the understanding of the World needs rectification as stated below.

**White matter; what is it?** Whatsoever trillions and trillions of stars of the universe release in the form of invisible matter by losing their mass that all is matter in the space to be called as white matter.

**Mass of the universe is constant.** What we can physically see, we understand it as matter but what we cannot see that also is a state of the matter (white matter). Entire universe is materialistic; no pocket of it is with absolute nothing. Universe has no beginning and has no end; it is under the reformation of visible matter from the white matter and de-formation of visible matter to white matter.

Prior to formation (re-formation) of the present Universe it was all occupied by the white matter. Gravity formed a 'Big black hole' at the centre of the Universe surrounded by the remaining white matter; denser over the 'Big black hole' and at the supposed outer end of the Universe the finest form of the white matter.

'Big black hole' was growing bigger, whereas pressure over it by the white matter kept on decreasing with the result a critical stage developed for its explosion. 'Big black hole' exploded; matter from it triggered formation of the visible universe. After explosion of 'Big black hole' with the passage of time mass of the new formed black holes kept on decreasing and a moment would come that there would be no black hole and no visible matter object; all would be transformed again to white matter.

**Due to expansion of the Universe,** pressure of the white matter over the visible objects and black holes is decreasing. Generated/produced white matter by the stars and other objects is compensating decreased pressure of white matter to major extent but not fully; with the result deformation of the visible objects and black holes (early explosion) to white matter is accelerating.

**Conclusion:** Besides above stated fact that no matter can exist if it is surrounded by absolute nothing; another fact that entire white matter of the Universe cannot be compressed back to size of a peanut for the reformation of the Universe suggests that what the World understands about the Big Bang (other than expansion of the Universe) that all is wrong and false.

Read in detail the discovery claim 'MATERIALISTIC UNIVERSE' on website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)  
\*Reward: See Terms and Conditions over website.

**Working Mechanism of Solar System**

Working mechanism of solar system based over discovered (understood) materialistic particle properties of the rays. (Get reward\* \$ 50,000 by proving the discovery wrong and false.)  
\* See Terms and Conditions over website.

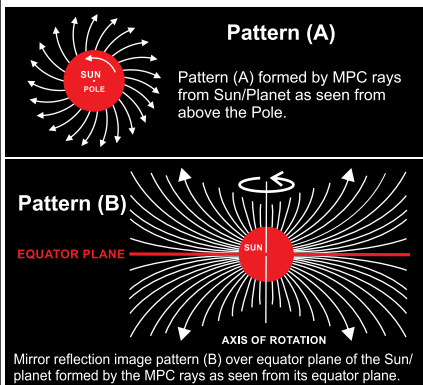
If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

Physicists by understanding light as a form of energy having dual property of the wave and particle achieve the objectives by fitting the understood property (energy, wave or particles) where it fits. Due to the said snag among the Physicists; Astronomers/Astrophysicists are in doldrums because they are the blind followers of Physicists. Tilted axis of the planets, retrograde direction of the Venus, eccentric/elliptical orbits and faster/slower rotation speed of the planets are all due to the materialistic particles curved rays of the Sun and of the planet itself along with other physical features of the planet. But due to the wrong knowledge with the Physicists about some vital physical properties of the rays, Astronomers/Astrophysicists are left with no option other than to consider major/minor impacts and collisions in the past as the cause of all the characteristics said above. In the absence of any other valid explanation the impact theories were believed to be correct, but whereas it is not so. Concerned (Physicists/Astronomers/Astrophysicists) by setting aside all already understood theories must understand materialistic and physical properties of the rays from the Nature's vast laboratory (solar space) by considering Sun and solar objects as the Scientific devices in it.

**Light or any other kind of ray:** Light or any other kind of ray has only one property that it is a state of the matter (materialistic) to be called as white matter and it acts as energy under specific conditions. Further, a ray of light or of any kind is composed of closely touching spherical materialistic particles and such kind of ray on its escape from a rotating celestial body adopts a curved or spiral path.



**Materialistic Particles Curved rays (MPC rays)** obeys all the laws of reflection, refraction and deflection etc. MPC rays form a specific mirror reflection image pattern over the equatorial plane of the rotating body (Sun/planet) from which they escape.

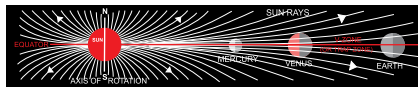


**What do MPC rays do?** MPC rays on their escape put back thrust over the body from which they escape and on strike over another body put forward thrust; besides it, MPC rays on their escape from a rotating body on their way also push the objects to orbit by their sweep like action. MPC rays along with other ejected independent particles from the Sun (star) or from the planet put greater magnitude of forward thrust over the striking bodies, like storm wind with rain drops or dust/sand particles puts greater thrust over the objects than simply by the fast blowing air. (Further, magnitude of forward thrust over the striking bodies by such kind of MPC rays goes beyond imagination when they strike over the big celestial objects).

**Role of the gravity along with MPC rays:** Gravity is not the only factor which governs formation and working mechanism of the celestial bodies. It is the backward thrust over the body by the outgoing MPC rays and forward thrust by the MPC rays over the striking celestial bodies along with the factor gravity which does the said job.

**Sun:** Backward thrust by the outgoing MPC rays over every particle of the Sun rotates the Sun faster at its equator than near to its Poles and also keeps the shape of the Sun a perfect sphere. Rotation to the Sun by the MPC rays has already been advertised in the February issue of this magazine (and see it over YouTube: Rotation to Sun by the materialistic particles curved rays).

**Why the solar family is almost over a plane?** World understands that Solar Nebula rotated dramatically fast and flattened to a thin disc of vast diameter. From the central part the Sun formed and from rest of the flat disc matter other solar objects have been formed thus solar family is over a plane. The Sun has not become oblate despite its fast rotation, rather it is a perfect sphere; this proves World's understanding wrong and false. MPC rays form mirror reflection image pattern over equatorial plane of the Sun; pattern formed acts as trap zone to keep the solar family over it. (See the sketch below as seen from equatorial plane of the Sun).



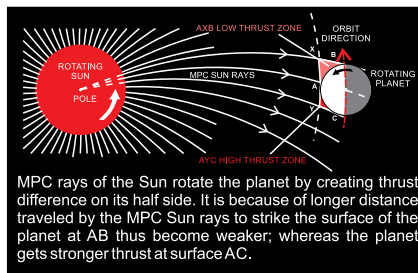
**Note:** Orbital planes of some of the objects do not coincide with the said plane; it is due to the MPC rays of the Sun and the object and some internal and external features of the objects as stated over the website.

**Distance of a planet from the Sun:** Scientists understand that a planet is at a distance from the Sun by the centrifugal force due to its orbital motion; truly it is not so. A planet is at a distance from the Sun by the three factors (i) Already known factor; the centrifugal force (ii) Forward thrust over the planet by the MPC rays of the Sun along with other solar ejects (or simply by the thrust of solar wind) and (iii) Repulsion factor between the MPC rays of the Sun and of the planet which it generates and radiates.

**Formation of the planets:** Solar planets have formed by the same process as the scientists at Hubble Telescope have discovered. In space planets form by clubbing together particles of the disk of dust and gases around the protostar. Matter of the solar disk got arranged density wise in flat rings by the two factors (1) gravity pull of the Sun and (2) forward thrust over disk particles by outgoing MPC rays of the Sun along with other solar ejects; denser/bigger near to the Sun and lighter/finest far away. Due to the said new discovered fact planets nearer to the Sun have been formed from the denser elements whereas planets formed at far off are from the lighter elements and gases.

**Planet's working mechanism:** If a planet has spherical shape and has no satellite or flat rings, has homogeneous mass and has no influence of gravity from any nearby planet(s); it would have zero axial tilt; constant orbital speed, perfect centric and circular orbital path due to the MPC rays of the Sun and planet. Rotation and orbital motion of a planet by the MPC rays has been stated below (Reason behind fast/slow rotation speed, rotation direction; tilt to the rotation axis; circular/elliptical/eccentric orbital motion etc by the planets are due to some internal and external features of the planet and by the MPC rays of the Sun and planet which has been stated ahead under specific planets).

**Rotation of the planet in general:** Planet does not rotate from the conservation of angular momentum got at its formation as the Academic World understands. MPC rays from the Sun due to their curved path put thrust difference over the part of the planet which faces the Sun resulting to rotate the planet in the direction in which the Sun rotates. Planet further rotates faster due to the back thrust from its own outgoing generated and radiated MPC rays. (See the sketch below as seen from Pole of the Sun).



**Orbital motion of the planet in general:** Orbital motion of a planet is not from the Kinetic energy got at its formation as the Academic World understands. MPC rays from the rotating Sun push the planet with sweeping like action to move the object (planet) over the equatorial plane of the Sun (see the above sketch). Mutual gravity attraction between the Sun and the object/planet keeps the planet in orbit around the Sun. Planet also gets orbital motion speed from its own generated and radiated MPC rays due to reflex action i.e., planet makes an attempt to force the Sun to orbit around it by its own MPC rays but the mass of planet being negligible compared to the Sun with the result planet itself orbits with faster speed.

**Slow rotation speed of the planets (Mercury and Venus):** Planets Mercury and Venus complete one rotation in 59 Earth days and 243 Earth days respectively whereas Earth does so in one day. Both the planets are very close to the Sun and have molten cores. Molten cores have mixture of elements; denser to the lighter. Gravity of the Sun pulls denser elements closer to it (Sun) and intends to keep denser elements always towards it (Sun). MPC rays of the Sun and of the planet provide rotation (torque) force to the planet; whereas accumulation of the denser elements among the less dense elements in the molten core which always faces the Sun puts retardation to rotation speed of the planets Mercury and Venus. Due to the stated fact planets Mercury and Venus rotate very slowly.

**(Note):** Due to similar reason rotation speed of the Moon got retardation on becoming satellite of the Earth by the high gravity pull of the Earth over its denser elements in the molten core and later Moon stopped its rotation permanently by another factor due to Venus as stated over the website).

**Faster rotation speed of the planet Jupiter:** Jupiter is far off from the Sun so its molten core does not put retardation to its rotation and Jupiter generates great quantum of MPC rays than any other planet, which provides faster rotation speed to it.

**The reverse direction rotation of the planet Venus:** Venus is closer to the Sun and has denser atmosphere (90 times denser than the Earth). MPC rays on entering into the denser medium (atmosphere) of the Venus bend towards normal resulting to provide rotation to the Venus in the reverse direction. Further, Venus rotates by its own generated and

radiated MPC rays in the direction in which the MPC rays of the Sun are rotating it. (Due to the same/similar reasons in the space gassy Hot-Jupiters which are closer to their stars, rotate in the reverse direction). (Some Hot-Jupiters which rotate faster in reverse direction than their host stars have adopted orbital motion in the reverse direction than other planets due to the stated reflex action. Planet Venus has not reversed its orbital motion because it generates feeble MPC rays and also rotates very slowly).

**Axial tilt to the planets (Mercury, Saturn, Earth and Uranus in particular):** Tilt to the axis of the planets is due to MPC rays of the Sun and internal and external features of the planets. **Planet Mercury** has zero axial tilt because it has no satellite or flat rings around. **Planet Saturn** has axial tilt due to its flat rings. Flat rings can never remain parallel to the equatorial plane of the Sun due to MPC rays of the Sun and of the planet; tilt to flat rings has resulted tilt to the axis of Saturn. **Earth** has axial tilt due to the similar reason of the Saturn by its Moon. Earth and Moon both are a clubbed body, their clubbed invisible cord cannot remain parallel to equatorial plane of the Sun due to MPC rays from the Sun. **Planet Uranus** rotates with tilted axis almost parallel to its orbital plane; solid core of the planet has been formed of two clubbed planets (say Ura and Nus) in the past history thus it is of shape prolate spheroid. A planet of this shape or gassy planet having solid core of this shape cannot rotate vertically due to the trap zone of V shape formed by the MPC rays of the Sun; planet has to roll over the equatorial plane of the Sun. (Uranus does not have bulge at its equator in spite of its faster rotation; its shape provides the proof that solid core inside the gassy shell is of shape prolate spheroid). Read over the website; formation of Planet Uranus from two nearby planets Ura and Nus.

**Circular and elliptical orbits of the planets (Uranus, Saturn, Venus and Mercury in particular):** Planet Uranus has its flat rings almost vertical to its orbital plane. When surface of the flat rings faces the Sun; it gets greater thrust magnitude from MPC rays of the Sun thus Uranus adopts wider orbital distance than when edge of the flat rings faces the Sun. Due to the stated fact orbital path of the Uranus is elliptical. **Planet Saturn** has vast flat rings and has tilted axis of rotation. Due to tilt of the flat rings; MPC rays from the Sun put greater thrust (push) to keep Saturn away from the Sun when inclined surface of the flat rings faces the Sun whereas when edge of the flat rings faces the Sun, Saturn comes nearer to the Sun resulting to make its orbital path elliptical. **Planet Venus** has greater real mean density than the Earth though its diameter is somewhat lesser. Planet Mercury is very small as compared to the Venus though real mean density of Mercury is greater than the Venus. Further Venus has huge denser atmosphere and has no satellite or flat rings. Due to the said physical properties of the Venus MPC rays of the Sun and gravity of the Mercury could not make much effect to distort its orbit so its orbit is almost circular and centric. **Planet Mercury** is very small planet in between the Sun and Venus. Gravity influence of nearby planets has made its orbital path somewhat different than normal.

**Flat rings of some planets (Planet Saturn in particular):** Every planet generates and radiates MPC rays but with different magnitude. Mirror reflection image pattern formed by the MPC rays over equatorial plane of the Saturn acts as trap zone similar to trap zone formed by the Sun over its equator plane. Planets closer to the Sun face high blow of solar-ejects thus they cannot trap fine particles around them in the form of flat rings (blow of solar ejects is so high that planets Mercury and Venus could not have their satellites). Planet Saturn has the best location to get the fine dust from asteroid belt and of suitable size to keep trapped matter in the form of flat rings. High powered MPC rays of the Jupiter with their thrust kept on colliding asteroids of the asteroid belt. Dust and chips formed move for wider orbit by the thrust of solar ejects. Saturn gets the first chance to trap dust and chips in its trap zone in the form of flat rings. Flat rings with other planets Uranus and Neptune have been formed the same way.

**Formation of Trojans from the asteroids by the Jupiter:** High powered MPC rays from the Jupiter due to their thrust keep some clusters of asteroids away resulting to form Trojans on both sides in the asteroids belt which move along as the Jupiter orbits.

**Rotation of Asteroids:** Scientists understand that asteroids get rotation from the light and radiation but they have failed to understand rotation of the planets due to the light and radiations (MPC rays) because of the mind-set from centuries that planets rotate by the conservation of angular momentum which is wrong and false.

**Comets:** Working mechanism of the comets suggests that their nucleus must be composed of high density elements. So, comets must have formed along with planets but from the disc matter which was in between the Sun and the planet Mercury. Solar ejects and solar-storm would have ejected the orbiting nucleus matter to form comets. Different speeds of the comet on its way and its functioning while visiting the Sun and going back and sweeping action by the MPC rays of the Sun over the vast volume of the comet along with its tail further suggest that comet does not orbit in elliptical shape but it adopts loop track path as stated over the website.

**Formerly understood planet Pluto** being smaller and at far off from the Sun gets greater sweeping like action over its orbital path by the MPC rays of the Sun thus it adopts orbital path somewhat different than the other planets (but somewhat similar to comets). Due to stated fact some scientists have called Pluto a stupid planet and debarred it from the category of the planets.

Much more is over the website about the solar system and other celestial objects.

Read in detail the discovery claim 'MATERIALISTIC UNIVERSE' on website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)

5. Issue February 2021 (Page-6)

If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

**A new discovery claim over invisible state of the matter:**

The entire Universe is materialistic; no pocket of the Universe is with absolute nothing. What we see, we understand it a matter but whatsoever (particles and rays etc) in the space we can't see that too is matter (materialistic).

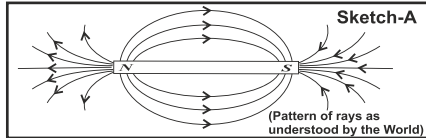
**Fact:** Whatsoever trillions and trillions of stars release in the form of invisible matter (rays, particles, gases etc) by losing their mass in their respective galaxies or in the space that all is mixture of different kinds of the matter to be called as **white matter** which has been falsely understood by the Scientists as dark matter. Further, presence of invisible matter in the galaxies called as dark matter by the Scientists was noticed in the year 1930s whereas Scientists came to know of the solar wind in the 1940s. With the result it has been understood that Sun loses mass to generate whatsoever it ejects to solar space. It is an utmost surprise that until now no one has linked mass lost by the stars to generate invisible white matter (falsely understood as dark matter).

**Rays of all kinds are materialistic:** A ray is composed of finest form of spherical particles. All spherical particles by closely touching each other form a row or a ray. Density, diameter and chemical properties of the spherical particles make a ray of different kind.

**Magnetic rays:** are composed of finest form of the particle matter. Iron or any other magnetic material acting as catalyst splits a kind of stable form of white matter of the space say 'NS' to two unstable forms of white matter particles rays say 'N' and 'S'; both rays intend to re-unite to form again stable white matter 'NS'.

**Forward direction of the magnetic particles rays:**

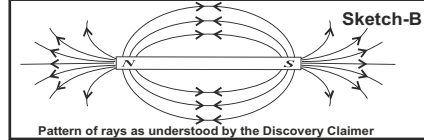
Information taken from the academic books and Internet shows pattern of the magnetic rays as shown over the sketch 'A'.



What does the Discovery claimer has understood?

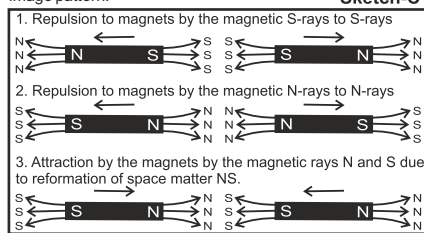
Understood pattern suggests that magnetism or magnetic rays are being generated at the North Pole and on entering as South Pole; magnetic rays travel through the

magnetic bar to North Pole to repeat the cycle (why is it not vice-versa?). Further; if South Pole of the magnetic compass is pointed towards the North Pole of the Bar-magnet it forms the same pattern of magnetic rays as North Pole of the compass forms with the South Pole of the bar -magnet. Then why does the forward direction of the rays differs over North and South Pole of the bar-magnet? Pattern formed by the magnetic rays must be the mirror reflection image pattern as shown below under the sketch 'B'.



Above stated fact and sketch 'B' and 'C' below confirms that magnetic particles rays 'N' and 'S' has been produced from the space matter NS by the magnetic matter (Bar magnet) acting as catalyst and rays 'N' and 'S' having the property to re-unite again to form stable white matter NS.

The following sketch 'C' as understood by the Discovery Claimer also justifies repulsion and attraction to bar magnets by the magnetic rays 'S' and 'N' forming a mirror reflection image pattern.



**Electrons of an atom, lightning or of the electricity** are a state of the matter, which act as energy under specific conditions. Generator generates electrons from a kind of the space's white matter along with the magnetic particle matter. In case terminals (positive/negative) of the generator are not connected to any device or to the earth; produced electrons disappear to space in the form of white matter.

**Smell/Odour** particles are the chemical particles released by the decomposition of the organic/inorganic chemical matter so smell particles are also a state of the matter.

**Gravity is not a wave or particle matter** but it is directly related to the matter of any kind including white-matter.

Scientists have claimed that they have detected gravitational waves emerging from clubbing (collision) of two nearby black holes. In fact it was not the gravitational waves but were compressions and rarefactions created in the space occupied by the white matter as medium, like by the sound in air medium.

**Energy is not merely energy** but it is a state of the matter (white matter), which acts as energy under specific conditions.

**There is no dark energy**, which is pulling the galaxies and other celestial objects towards outer space (or expanding the Universe) but it is the outwards going white matter particles and rays generated and released by the stars, planets and other objects that are pushing the celestial objects along with the galaxies towards the outer presumed end of the Universe.

**Conclusion:** Periodic table is for the visible states of the matter (solid, liquid and gases) but so far the World has not been able to correctly understand physical, chemical and biochemical properties of the invisible matter. Correct understanding of **true states of the matter and particularly the invisible matter** by the Discovery Claimer has resulted to conclude that Prime and only one Fundamental of the Universe for its existence, formation and working is the 'Universe is materialistic'. Already understood four fundamentals of the Universe by the World are the sub-fundamentals of it. As under the Religion belief there would be only one God (not so many). Similarly, there can't be four Fundamentals. The said discovered and claimed Prime and only one Fundamental would lead to replace all theories, postulations, hypotheses and speculations with the facts.

**Must read discovery claim advertisements over Astronomy and Light** published in the magazine 'ASTRONOMY', which appeared in the issue Feb 2020 to August 2020 (7 Nos) and over subject 'Light' (Physics) January 2021.

Much more over the discovery claim is over the website [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com) under title MATERIALISTIC UNIVERSE.

After going through the discovery claim as stated above; please reply that why above stated discovered and claimed facts are not correct.

E-mail: [ramesh\\_varma@newtonugeam.com](mailto:ramesh_varma@newtonugeam.com)

6. Issue July 2020 (Page-65)

**Galaxy, Black Hole and Pumping Hole (new name)**

Only new understandings (discoveries) about the galaxy, black hole and pumping hole have been stated below. These are based on newly understood (discovered) materialistic particle properties of the rays.

If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

Scientists have not yet correctly understood formation and working mechanism of the solar system then how can they understand correctly formation and working mechanism of the celestial bodies which are thousands of light years away from us. (Discovery claimer Ramesh Varma has already challenged the World to prove his discovery claim wrong over working mechanism of solar system based over understood materialistic particle properties of the rays). In case they cannot prove it wrong then they must accept the discovery claim.

**Galaxy:** Rotation of the galaxy is not due to any angular momentum but it is due to the materialistic spherical particles curved rays of the cluster of massive stars along with their star's ejects which form the galactic bar. Invisible matter noticed by the scientists in a galaxy is not dark matter but it is white matter in the form of materialistic particles rays and other star-ejects generated and released by the stars and other celestial bodies of the galaxy by losing their mass.

**Black hole:** Maximum mass a black hole can have depends upon the pressure of the white matter over it. A black hole keeps on gaining mass from the surrounding space whereas pressure over it by the white matter which surrounds it keeps on decreasing due to the outward expansion of the Universe. Both the stated factors create a climax (critical stage) when a black hole explodes.

Formation of one bigger black hole by merging of two nearby black holes increases its gravity (or sucking power to suck the surrounding matter or white matter). This phenomenon creates rarefaction shell in the white matter medium over the newly formed bigger black hole resulting to trigger formation of compressions and rarefactions in the space occupied by the white matter. This is similar to compressions and rarefactions created in the air medium by the impact and collision between the two objects. Recently scientists have claimed that they have detected gravitational waves created by the merging of two black holes. In fact, these are compressions and rarefactions and not gravitational waves. (Scientists while showing merging of two black holes in their artistic creation show their rotation direction in the opposite, whereas two nearby or binary black holes can never rotate in the opposite directions.)

Young, active and massive galaxy does not have single or twin (binary) black hole(s) at its centre. The black hole(s) understood by the scientists are in fact the pumping hole(s) having similar features to the black hole.

**Pumping hole:** Young, massive and active galaxy has pumping hole at its centre created by the cluster of massive stars by pumping their outgoing materialistic particles curved rays along with other ejects. In a galaxy twin pumping holes can still exist close to each other due to their repulsion caused by their materialistic particles curved rays but binary black holes can never exist close to each other due to their mutual attraction. Physical features noticed of the dense pumping hole and that of the black hole will appear almost the same. Black hole develops by its own gravity due to sucking/attraction of space matter from the surrounding whereas pumping hole is created at the centre by the cluster of massive stars by pumping their generated white matter. Both (pumping and black hole) eject jets from their poles but ejected white matter differs.

Read in detail the discovery claim 'MATERIALISTIC UNIVERSE' on website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)

7. Issue May 2020 (Page-65)

Get reward\* \$ 50,000 by proving the below stated new discovered fact as wrong.

**What suggests mean densities of planets Mercury and Venus?**

If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

World came to know about solar wind and materialistic properties of the rays centuries later than calculating mean densities of the planets. Humans never forget what they have learned earlier. So, by the mind set, concerned are with old academic knowledge from centuries over the said subject, which has been proved wrong due to new discoveries as stated below.

Mean density of the Earth has been practically known that it is 5.52 gm/cm<sup>3</sup> but whereas mean densities of all other planets have been calculated by the known planetary laws and known mean density of the Earth.

Scientists understand that a planet is at distance from the Sun by the centrifugal force due to its orbital motion; truly it is not so. A planet is at distance from the Sun by three factors (i) Known factor: by the centrifugal force; (ii) Forward thrust over the planet by the materialistic particles curved rays of the Sun along with other solar ejects (or simply by the thrust of solar wind) and (iii) Repulsion factor between the materialistic particles curved rays of the Sun and of the planet which it generates and radiates.

Factors (ii) and (iii) have not been accounted for while calculating mean densities of the planets due to which calculated mean densities of other planets (other than the Earth) are not correct. Planets Mercury and Venus are the best suited planets, which prove easily that calculated mean densities are wrong.

**Planet Mercury:** Planet Mercury is much smaller than the Earth; its diameter is 4876 KM, whereas that of the Earth is 12756 KM. Mercury is closer to the Sun than the Earth. Calculated mean density of the Mercury is 5.42 gm/cm<sup>3</sup>, whereas correct mean density of the Earth is 5.52 gm/cm<sup>3</sup>.

A smaller planet and of lesser mean density cannot exist nearer to the Sun than the Earth due to high blow of solar wind. Calculated mean density suggests that Mercury should be far away from the Earth but whereas it is closer to the Sun. Situation of the Mercury suggests that mean density of it is much greater than the Earth.

**Planet Venus:** Diameter of the planet Venus is smaller than the Earth and its mean density too has been calculated lesser than the Earth. Due to the same reason as stated for the planet Mercury, true mean density of the Venus is greater than the Earth but lesser than the Mercury. Further, Venus is closer to the Sun than the Earth but it holds much greater quantum of atmosphere (against high blow of solar wind) than the Earth. This also suggests that true mean density of Venus is greater than the Earth.

**Conclusion:** Scientists must come forward to explain that how smaller planets (Mercury and Venus) and of lower mean density are closer to the Sun than the Earth to face higher blow/thrust from the solar wind? Or they must accept that academic knowledge over working mechanism of solar system is wrong and false.

Read in detail the discovery claim 'MATERIALISTIC UNIVERSE' on website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)

\*Reward: See Terms and Conditions over website.

*If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).*

## Some new discovery claims

**Note:** Previous New Discovery Claim advertisements published; (1) February 2020: Rotation of the Sun (2) March 2020: New Discovery: Origin of the Moon (3) April 2020: Big Bang; to which extent is it correct? (4) May 2020: What suggests mean densities of planets Mercury and Venus? (5) June 2020: Working Mechanism of Solar System (6) July 2020: Galaxy, Black hole and Pumping hole (new name).

## Mysteries of the Moon

### Most mysteries related to the Moon have now been solved

(New Discovery; Origin of the Moon has already been advertised in the March 2020 issue).

All solved mysteries are beyond the purview of computer modelling to know the secrets behind the phenomena. Only visualisation by the human brain and computing of the factual data related to the Moon, Astronomy and some scientific laws can reveal the answers. Below is the scientific story of the Moon that provides the answers to the following mysteries (detailed explanation of stated mysteries and some others is on the website).

**Mysteries:** Why the Moon keeps the same face towards Earth? Why are the volcanic eruptions and maria over the Moon concentrated on the side near to the Earth? Why do meteors which strike over the Moon have some pattern according to their sizes? What causes mysterious quakes that vibrate through lunar rocks over the side of the Moon which is away from the Earth? Why is the Moon closer to the Earth when it is close to the Sun and farther away when away from the Sun?

**Visualized Scientific story:** In the past history, young Earth and young Moon were adjacent planets. They on gaining mass from the disc of particles and asteroids which were around the Sun shortened their orbital distance. With the result young Moon came closer to the young Earth at their alignment with the Sun. Due to mutual gravity attraction, young Earth pulled the young Moon while it was passing nearby. The young Moon got derailed from the orbit around the Sun and adopted new orbit around the Earth and became a satellite of the Earth.

Both clubbed together at a distance and due to their clubbed mass, moved closer to the Sun. Forward thrust from the solar wind (materialistic particles curved rays along with other solar ejects) on the clubbed formation has tilted rotation axis of the Earth. Orbital plain of the Moon too changed with respect to orbital plane of the Sun due to tilt of the Earth. Forward thrust by the solar wind is also keeping the Moon closer to the Earth when it is close to the Sun and farther away when away from the Sun.

The Moon prior to becoming satellite of the Earth was also rotating like Earth. The Moon while orbiting around the Earth had to come closer to the planet Venus when the planet Venus overtakes the Earth while orbiting around the Sun. Due to retrograde rotation of the Venus, its materialistic particles curved rays intend to rotate the Moon in the reverse direction. The Moon with feeble generated materialistic particles curved rays could not oppose the move of the Venus which resulted to halt its rotation. From that moment, the Moon has the same face towards the Earth and in addition to it another factor stopped rotation of the Moon. Gravity of the Earth kept on pulling densest elements from the molten core of the Moon towards it, resulting to slower rotation speed and finally to lock its spin.

Once rotation of the Moon was stopped, gravity of the Earth got the opportunity to pull the denser core of the Moon towards it to lock rotation of the Moon permanently by making it eccentric. Further, continuous pull by the gravity of the Earth for millions of years over Moon's denser core made the mantle shell between the core and surface of the Moon thinner (Earth's gravity transformed spherical core to an egg- or pear-shaped core having pointed side towards the Earth which made mantle even thinner).

Core of every planet is molten, obviously core of the Moon too would be molten in the past. Continuous gravity pull by the Earth over the core of the Moon has pulled denser molten mass towards it (Earth) and gases were pushed opposite towards the side of the core which is away from the Earth. Escape of the gases through cracks of the rocks causes moonquakes resulting to vibrate the rocks.

Gravity of the Earth has pulled molten and denser lava from the molten core of the Moon due to thinning of the mantle which faces the Earth. (Over the Earth volcanoes erupt due to pressure of the gases from inside the Earth but volcanoes over the Moon were due to two factors; one similar to the Earth, and another additional i.e. pull by the gravity of the Earth over the molten matter existing beneath the thin mantle of the Moon).

The Moon had some craters prior to its capture by the Earth but after becoming a satellite of the Earth pattern of the newly formed craters changed. Most big craters formed over the side which is away from the Earth. When any meteor dashed towards the clubbed formation (Earth and the Moon) materialistic particles curved rays from the Earth

attempted/attempts to keep it away but feeble materialistic particles rays from the Moon cannot do that. So, most of the big impacts (craters) are towards the side of the Moon, which is away from the Earth. Floating space particles are drifted towards the Moon by the materialistic particles curved rays of the Earth whereas feeble materialistic particles rays of the Moon cannot drift them (particles) away. So, the fine dust particles have filled the already existing craters and newly formed too which are towards the side of the Moon facing the Earth.



## Jupiter and Hot Jupiters

### (Most Mysteries solved)

Jupiter of the solar system and Hot Jupiters in space have numerous mysteries which cannot be understood correctly unless the concerned understand formation and working mechanism of the solar system based over understood (discovered) materialistic particle properties of the rays (for detailed explanation read on the website).

**Jupiter:** Why Jupiter is the biggest planet?: During formation of the planets from the flat disc of dust and gases around the protosun, gravity and forward thrust over the particles by the materialistic particles curved rays from the Sun along with other solar ejects have arranged particles of the disc. Denser and bigger nearer to the Sun and others at far off. The said understood factor has accumulated maximum mass of the disc particles at the centre from which the planet Jupiter has been formed. The protocoore of Jupiter started its journey at a distance far away from the present location. Due to the stated fact it is the biggest planet. During migration from far off to present location Jupiter swallowed thousands of big objects/asteroids, comets and number of planets too. Recently, it has swallowed two asteroids and with the passage of time it would swallow the entire asteroid belt. Jupiter with an attempt to become hot Jupiter would swallow all the terrestrial planets.

**Why is centre of the solid core of the Jupiter not as dense as it was understood?:** Origin of the protocoore of the Jupiter was at far off from the present location. It has migrated due to addition of mass as stated above. As Jupiter gained mass, it shortened its orbital distance. Every next shell formed of the solid mass over the core was denser than the existing core; that is why centre of the core of the Jupiter is less dense than the upper solid shells.

**How did Jupiter get enriched in heavy elements, compared to the Sun?:** As per the discovery claim nucleus of the comets have formed from the denser elements which were in the flat disc between the Sun and the planet Mercury. Formation mechanism of the Jupiter stated above suggests that due to high gravity pull, swallowing of passing by comets in the past history would have enriched Jupiter with heavy elements.

**How does the interior and exterior of Jupiter rotate?** Generated materialistic particles curved rays which emerge from the centre to escape, rotate the liquid and cloudy matter besides rotation to its solid/molten core. Solid core would rotate in the same direction in which the Sun rotates whereas intensity of generated materialistic particles curved rays and density of the medium determines rotation (circulating) speed and rotation (circulating) direction of the Jupiter's liquid and gassy matter.

Surface of the solid matter would not be perfectly smooth and round, it would be partially imbedded with some swallowed big solid objects and planets due to which upper circulating gassy matter forms eddies. (Planets which have denser and thick gassy and liquid gases shell provide gentle and soft landing instead of crash impact to the attracted objects and planets). For further clarification read ahead formation of the planet Uranus.

**Why Jupiter rotates faster?:** Jupiter is far off from the Sun so its molten core does not put retardation to its rotation speed as molten cores of the planets Mercury and Venus does. Further, Jupiter generates great quantum of materialistic particles curved rays, which on their escape provide faster rotation to it due to their back thrust.

**What relationship do the Trojans have with the Jupiter?:** High powered self-generated materialistic particles curved rays from the Jupiter keep a group of asteroids away with their thrust. On the other side thrust pushes another group of asteroids to orbit faster than the rest of the asteroids resulting to form Trojans (accumulations of asteroids) from the asteroid belt on both sides which move along as the Jupiter orbits.

**Hot-Jupiters: How Hot-Jupiters form?:** The process to form Hot-Jupiter is the same as stated above for the Jupiter but to form Hot-Jupiter, star and star system bigger than the Sun and solar system is a must.

**Why some Hot-Jupiters which are closer to their host stars rotate in the reverse direction?:** Reason is the

same as true reason behind rotation of the Venus in the reverse direction. Planet (Hot Jupiter) which is closer to its host star, only that planet (Hot-Jupiter) rotates in the reverse direction. Strong materialistic particles curved rays from the star enter into the denser atmosphere of the Hot Jupiter and on entering into the denser medium they bend towards the normal resulting to provide rotation to the Hot Jupiter in the reverse direction.

**Why some Hot-Jupiters also orbit in the reverse direction than the other planets?:** Hot Jupiter which rotates faster in reverse direction than its host star, likely to adopt orbital motion in the reverse direction due to its reflex action. **Reflex action:** Hot Jupiter by its own strong materialistic particles rays attempts to push its host star to orbit around it but due to its (Hot-Jupiter's) mass much lesser than the star; it itself gets orbital push in the reverse direction.



## Uranus

Formation of Uranus, tilt to its axis and elliptical orbit are based over understood (discovered) materialistic particle properties of the rays.

**Solid core is of shape prolate spheroid thus it is tilted:** Planets have formed from the disc of dust and gases which were around the proto-sun. All the planets have migrated from far off to the present location by swallowing particles, asteroids and even some smaller planets. Planets which have thick gassy and liquid gassy shells, provide soft landing to the objects or even planets/satellites which are attracted towards it. With the passage of time attracted object sinks into its core. Because of the following reason solid core of the Uranus is formed of two clubbed planets (or it can be said of shape prolate spheroid). Materialistic particles curved rays from the Sun form a trap zone of shape 'V' over its equatorial plane. The stated trap zone does not allow any planet of shape prolate spheroid to rotate vertically over equatorial plane of the Sun; it has to spin with its axis almost parallel to the said plane. So, shape of the solid core of Uranus must be of shape prolate spheroid. Finding by the scientists has confirmed so. (Scientists have noticed that Uranus does not bulge at its equator as would expect for such a composition and such a rapid rate of spin; its equatorial diameter is only 2.4 percent bigger than its polar diameter.)

**Visualized scientific story of the formation of the planet Uranus:** During formation era of the solar planets; beyond the planet Saturn there were two adjacent planets, say Ura and Nus. Both planets had flat rings and they were rotating with some tilted axis due the thrust from materialistic particles curved rays of the Sun falling on their flat rings. Both planets were gaining mass by swallowing asteroids with the result their orbital distance was decreasing. A moment came that farther planet Nus came closer to the planet Ura at their alignment with the Sun. Their mutual gravity attraction triggered the phenomenon to club them together. Thick and dense gassy/liquid gassy shells provided cushion for their soft clubbing. While clubbing, both got greater tilt to their axis due to their own outgoing materialistic particles curved rays with the result South Pole of the planet Ura clubbed with the North Pole of the Planet Nus. In the process of clubbing most rings' matter drifted away to space by the solar wind but later at stabilization of the clubbed planet Uranus, flat rings reformed and were regained the same way as planet Saturn got its flat rings (Explanation is on the website).

**Elliptical orbit of the planet Uranus** is because of its flat rings which are almost vertical to its orbital plane. When surface of the flat rings faces the Sun; it gets greater thrust magnitude from the materialistic particles curved rays of the Sun thus Uranus adopts wider orbital distance than when edge of the flat rings faces the Sun. Due to the stated facts orbital path of the Uranus is elliptical.

Also see over the YouTube:

1. New Discovery: Rotation to Sun by its materialistic particles rays
2. Moon & Earth were adjacent planets. How did the Earth capture it due to relative slow orbital motion?

Read in detail the discovery claim 'MATERIALISTIC UNIVERSE' on website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)

Please reply that why above stated discovered facts are not correct.

# True physical properties of Light (Rays of all kinds); A New Discovery claim.

Light does not have dual properties of wave and a particle. It has only one property that a ray of light consists of closely touching materialistic spherical particles.

If Discoverer Ramesh Varma (India) had been academic qualified PhD scientist (not citizen scientist); discovery claim instead of being an advertisement, would have appeared in all Science Journals as publication resulting to make it viral among the concerned. (Mode of new discovery information set by the Academic World is a curse on the mankind).

Ibn al-Haytham, known Scientist of the past made significant advances 1000 years ago in optics (light), mathematics and astronomy. He is known to have said "If learning the truth is the Scientist's goal... then he must make himself the enemy of all that he reads". By this he meant it was essential to conduct experiments to test what is written rather than blindly accepting it as true.

Correct understanding of true physical properties of 'Light' is the key to correctly understand formation and working mechanism of the solar system thus of the Universe and every thing/life within it.

To date, the World has not been able to understand Light correctly. History of Light reveals that some concerned have concluded that Light is a wave and some observed Light is the stream of particles. Finally, Physicists to close the door for any further debate over properties of the Light have come with the idea to declare that Light has dual properties of a wave and a particle. They fit property (wave or particle) of Light, where it fits to proceed ahead and left the Astronomers in lurch from correctly understanding basics of the Astronomy. Basic Astronomy and working mechanism of the solar system based over materialistic particles rays should be the subject of Physicists. Otherwise, human would go extinct without correctly understanding light and astronomy.

So far both the subjects Light and Astronomy float over theories, postulations, hypotheses and speculations; none of it stands for the fact.

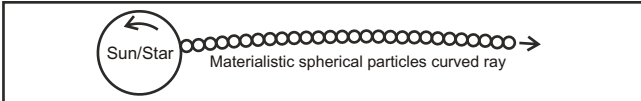
Light is the finest and lightest form of matter and particles move fastest. Due to the said fact Human cannot develop any scientific device or can build a scientific laboratory of any kind and anywhere (over the Earth, underground or in space); where correct physical properties of the Light could be known or verified. To know **true physical properties of the Light**; one has to observe/visualize/understand like Discovery Claimer by considering Solar Space as Nature's vast Laboratory and whatsoever is in the Solar Space (like Sun, planets, satellites, asteroids, comets, dust etc) that should be considered as the scientific devices. By knowing how the rays of the Sun affect the existence and working of each solar body; **true physical properties of the Light** can be known (or verified)

### Conclusion by the Discovery Claimer:

Light is not merely a form of energy; it is a state of the matter which acts as energy under specific conditions. Light is not like a living body (human) that can adopt double standard. In fact light has only one property that it is materialistic (a state of the matter) and it is composed of finest form of spherical particles. All particles propagate while closely touching each other as shown below over the sketch.



Such kind of particles ray adopts a curved/ spiral path on its propagation while emerging from a spinning/rotating body (like, Sun). Radiation rays (materialistic spherical particles rays) from the planets too adopt similar path as shown below over the sketch.



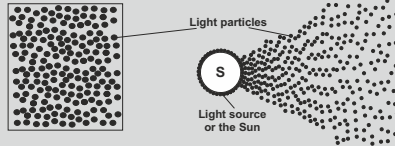
As the ray advances from its source, it keeps on shedding its overlapping to occupy the space ahead by diluting its intensity and density too. Further, materialistic spherical particle rays obey all laws of light, like reflection, refraction, diffraction etc.

### Comparison of understanding Light as stream of particles understood by the World and ray of materialistic spherical particle rays by the Discovery Claimer:

It surprises the Discovery Claimer that so far no one has come with the correct explanation of particle behaviour of Light (though scientists have virtually accepted that Light has dual property of wave and a particle). Exhibited below are some sketches taken from the Internet showing how the scientists understand Light in the form of particles which makes no sense to the understood theory of particle property. Particle ray understood by the Scientists does not coincide with wave of light to even falsely accept dual property of the light as wave and particles. In fact Physicists have done so intentionally to up keep wave theory because they all have read and accepted it and done PhD and higher education level while accepting a ray as a wave. Now due to vested interest and mind set their mind does not accept any other version other than the wave theory.

### 1. Propagation of light rays:

What the World understands Light rays in the form of particles? (Sketch taken from Internet).

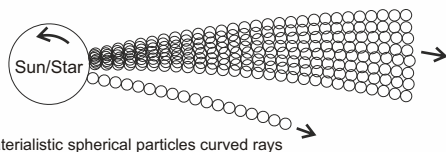


From Magazine 'Astronomy' issue October 2014, Page 29

Any particle, photon, electron, or other behaves both as a wave and a particle.

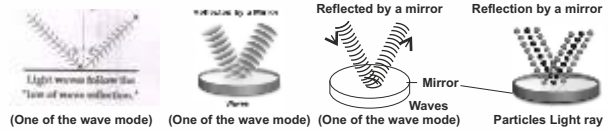


What the Discoverer has understood Light ray formed of materialistic spherical particle?

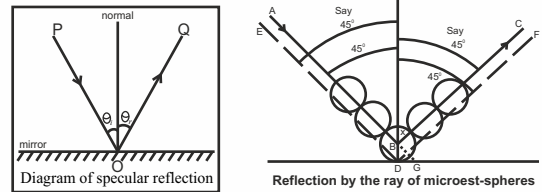


### 2. Reflection of light rays:

Reflection of the ray in the form of particles and waves understood by the World. (Sketch taken from Internet).



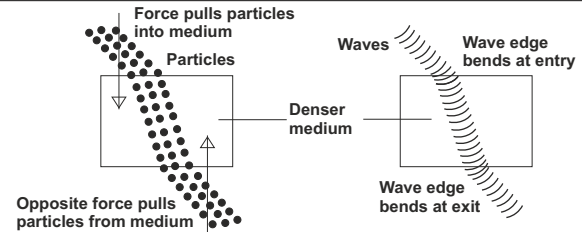
What the Discoverer has understood reflection of light in the form of materialistic spherical particles ray.



In the above sketch particles (spheres) of the light rays have been shown of big size to understand but in fact a ray of light is composed of microest-spheres, so thin/fine are the particles that we have no means to draw such a fine row of spheres which would seem to be a line as shown above.

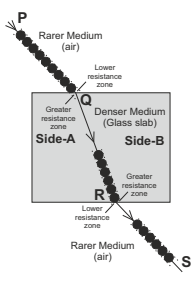
### 3. Refraction of light rays:

Refraction of the ray in the form of particles and waves understood by the World: (From Internet, September 2009).



Refraction by the particles-rays as understood by the Challenger.

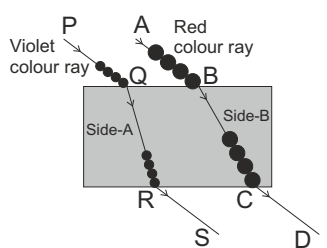
When a monochromatic particle ray PQ from rarer medium touches the denser medium at point Q; the microest sphere at interface which touches the denser medium faces difference in resistance over its hemispheres towards side (Side-A) than the opposite side to it (Side-B). This difference in the resistance to particle on its entry to denser medium (greater resistance to hemisphere of the particle towards Side-A) results to spin the particle a little resulting to bend the materialistic microest sphere (particle), thus the ray bends in direction QR towards Side-A.



Microest-sphere (materialistic-particle) in the rays QR when touches at R; it again faces the difference in resistance to its either side hemispheres but in the opposite magnitude than the resistance faced at Q. Thus the ray particle at R again spins a little resulting to bend the ray QR but in the opposite direction.

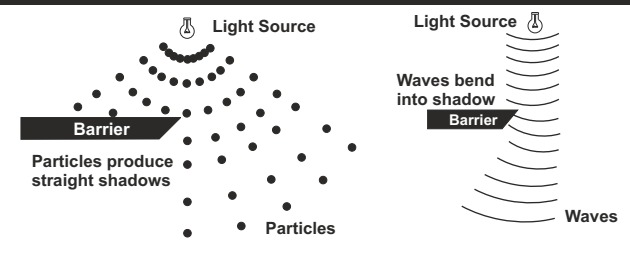
### Different coloured-rays of light:

Rays of different colours of light have different wave-lengths or different sizes of their particles besides difference in their densities. By ignoring different densities, all the rays of light which have different colours would deviate differently because of their different sizes (surface area) and different total mass. Small particles (violet-rays) would deviate to greater angle due to greater resistance difference between the hemispheres of the particles towards the side-A and side-B than the resistance difference over hemispheres to large sized particles of the Red-ray because of the factor surface area and mass ratio. Explanation of said factor is ahead).



### 4. Diffraction of light rays:

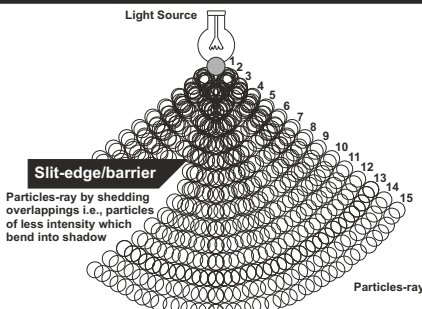
Diffraction of the rays at the edge barrier (or through a narrow slit) as particles and waves as understood by the World. (From Internet September 2009.)





**Diffraction of particles rays as understood by the Challenger.**

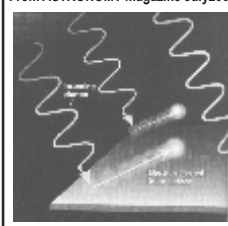
Light/ray consists of microest spheres and on moving at high speed just over the edge creates perfect-vacuum (white matter vacuum but not air vacuum) like water or air would create vacuum while flowing at high speed. Because of the vacuum of white-matter created by the particles of the ray at step No.7, the next



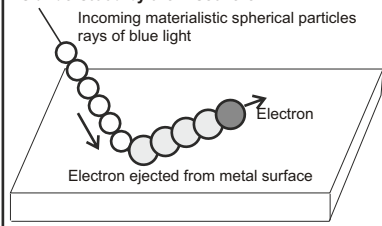
particles of the ray at step No. 8 of the light/ray consisting of microest spheres would shed overlapping to fill the white-matter vacuum space over the edge and so on thus light forms diffraction over the edge and bends into the shadow. Further, because speed of the particles is very high, so light/ray would bend a little (not too much as shown over the sketch because of large sized particles) into the shadow to follow flared path.

**5. Photoelectric effect confirmed that light is a stream of particles.**

From ASTRONOMY magazine July 2009.



**As understood by the Discoverer**

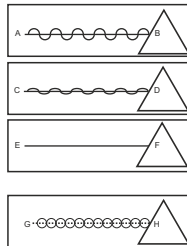


**Why do calculations done over the laws of light by understanding it as a wave and by considering a ray consisting of closely touching materialistic spherical particles are the same?**

Truly speaking a ray of light does not propagate in the form of wave. Some following sketches would make the concerned understand that why both show the same result.

When a concerned has to study or to calculate the path of a ray in wave motion while it has to pass through a prism or glass slab etc, the concerned always adopts one phase i.e., plane parallel to the paper or to the computer screen as stated below, the ray AB.

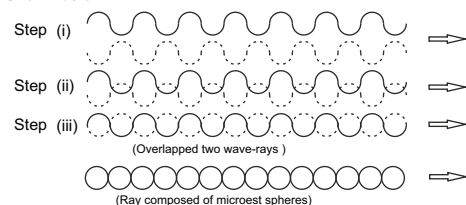
- This phase of the wave-ray AB always lies in the plane of the paper or screen of the computer.
- The same ray (CD) in wave motion at 45° to the plane of paper/computer-screen: This understanding of the rays would result to lower its amplitude thus the calculated results.
- If we have to draw this way ray (ray travelling in wave motion) perpendicular to the paper, it would be seen a straight line EF.
- Now if we rotate the wave AB to its axis AB. This could form an unlimited numbers of versions at every degree of rotation. Now if we spin fast this wave to its axis AB, it would form a chain of spheres. This chain of spheres would follow all the laws of light, which concerned falsely attempt to understand that a ray of light travels in wave motion.



- Conclusion from above sketches:** By sketching a ray at different planes as shown above (in wave form) every Concerned calculates the result (travelled path after reflection/refraction etc) of a ray by understanding the ray as a wave but actually by camouflaging a wave-ray to spherical-particle-ray as shown over the sketch.

**Overlapping of two wave-rays:** Overlapping of two waves of the same specifications would result to form a ray similar to ray composed of closely touching spherical particles.

**Bring two wave-rays closer and closer till they form a ray of spherical particles as shown below.**



**Note:** Overlapped two wave rays is a ray similar to ray composed of closely touching materialistic spherical particles rays.

**CONCLUSION:**

- Lightning (electrons) adopts the shortest path then why a ray of light would adopt the longer path to travel in waves?
- No two different versions of the laws can yield the same results in science but these two stated understandings give result so, strange but true. **Why so? This all is due to the said error (blunder error of understanding).**
- From more than a century World adopted the mode of understanding that light has dual property of wave and a particle. Why does the World not yet come with the finding that when light of a particular wavelength behaves as particle then what is the diameter of the particle? Discovery Claimer has no laboratory or any devices with him to verify it. So, it is with the

Physicists to find it. Discovery Claimer has concluded from the understanding of the World about the wave of light that if frequency is taken into account then diameter of the light particle would be equivalent to its wavelength and if amplitude and wavelength is taken into account then diameter of the particle would be half of the wavelength.

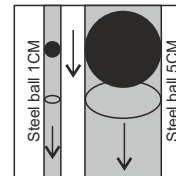
**Speed of different colour rays:**

World knows that in vacuum all colour waves travel at the same speed called 'c'; light of different wave lengths or colours, travels at different speeds when they travel through any medium other than vacuum, violet travels the slowest and red travels the fastest. Reason behind it, the World understands that red colour has longer wave length than the violet thus red travels at faster speed than the violet.

In fact it is not so. Light of red colour has bigger spherical particles than the violet colour. Violet spherical particles being of smaller diameter than the red thus they face greater resistance while passing through the medium due to their surface area-mass ratio. Below are some examples which confirm that smaller spherical matter faces greater resistance than the bigger during passing through the medium.

**Examples:** If two steel balls of 1cm and 5cm are dropped from a height at the same time; steel ball of diameter 1cm would fall with slower speed than the 5cm ball due to higher resistance faced with the air because of mass-surface area ratio. In vacuum (no air zone) column both balls would fall with the same speed. (Perfectly it is not possible because of white matter, which exists in vacuum column). Another example is also here; If two air bubbles (spheres) are released at the same time from the bottom of a vertical long glass jar filled with water. Smaller air bubble (sphere) would move upwards with slower speed than the bigger bubble due to the same factor as stated above.

**Practical:**



Cross section of the air column from which 1cm diameter and 5cm diameter ball has to fall due to gravity pull is 0.786cm<sup>2</sup> and 19.64cm<sup>2</sup> whereas their weight is 4.106gms and 513gms respectively. To disperse 1cm<sup>2</sup> of air column's cross section, mass of the smaller ball is equivalent to 4.106÷0.786= 5.22gms and whereas to disperse 1cm<sup>2</sup> of air column's cross section, mass of the bigger ball is equivalent to 513÷19.64=26gms. **Conclusion:** To disperse 1cm<sup>2</sup> of air column smaller ball would exert a force due to gravity of 5.22g whereas the bigger ball would exert a force of 26g thus smaller ball would fall slowly than the bigger ball.

Speed of light in vacuum too is not the same for all colours because the difference in speeds is so minor that it is not possible to detect unless some sophisticated devices are developed. Vacuum (no air zone) is not absolute nothing zone but it is occupied by the white matter (falsely understood by the World as dark matter). White matter zone too poses resistance to light; had space been absolute nothing; light would not have a limited speed but speed would have been infinite; truly speaking then light would not have existed.

**What about Einstein's equation e=mc<sup>2</sup>?**

In the equation 'e' is for the energy, 'm' is for the mass and 'c' suggests that initially when Einstein conceived the equation in his mind; he must be searching for a suitable constant that is why he put 'c' in the equation. Later he would have conceived the idea to put velocity of light in metres (3,00,000 kms/sec) in place of constant. (If length of a metre was equivalent to 30 inches or 50 inches than the existing length; speed of light would not have the same numerical then what would be the status of the equation? Imagine it. At that time influence of Einstein was so great that concerned would have accepted the equation as correct even if a metre had length 30" or 50" or any other than the existing; it might be possible that equation would have existed till date as correct). World must put constant (may be the speed of light i.e., 3,00,000 Km/Sec) for 'c' but without linking it to the speed of light; it would go away with most of the wrong understandings to correctly know the light and the Universe. Speed of light from core of the Sun to its surface is not the same as it is in the solar space. Due to thinning of white matter presence in the space at far away from the planetary zone; speed of light might be more than that understood. So, relationship of energy with the speed of light might not be proper.

Further, Due to linking of 'c' to velocity of light; Physicists have falsely understood that light particles (photons) have no mass and Physicists also claims that high gravity pull of Black hole bends the light rays. (When photons have no mass then how the light rays bend due to gravity pull?)

**Most phenomena related to Astronomy prove that light is a ray composed of closely touching materialistic particles curved rays and light (rays of any kind) is not a wave.**

Physicists and Astronomers have accepted that light ray consists of particles. How particles of the light ray propagate; they have not yet understood correctly? Rays of light (or any kind of rays) consisting of closely touching particles act to perform the following phenomena.

**Acceptance of materialistic spherical particles curved rays concept has resulted to prove that:**

- How and why planets rotate?
- How and why some planets rotate faster and some slower?
- How and why some planets like Venus rotate in the reverse direction?
- How and why axis of the planets got tilt?
- How and why planets orbit around the Sun?
- How planets got their flat rings?
- How and why Jupiter has formed Trojans?
- How and why hexagonal swirling cloud tower at the planet Saturn's Pole formed?
- How and why the Sun keeps its family almost over a plane passing through its equator?
- How and why the Sun rotates with different speeds; faster at its equator than near to its Poles?
- How and why the Sun is a perfect sphere though it rotates faster?
- How and why the Universe is expanding outwards?
- How and why the galaxies rotate?
- How and why a comet does not orbit in elliptical orbit but adopts a loop track path?
- And much more beyond explanation over here.

**(Whatever may be the reason(s) behind above said phenomena but what the World understands to date that all is wrong/false and rubbish)**

**Note:**

- Understanding of the light consisting of closely touching materialistic spherical particles is primarily to understand true working mechanism of solar system along with the factor gravity. True knowledge over the solar system is the key to understand the Universe and every object and space within it.
- It is now up to the Physicists to know about light better than stated above by the Discovery Claimer.
- Physicists must read previous seven advertised discovery claims in the magazine 'ASTRONOMY' which appeared from February 2020 to August 2020 to know better that what is light.
- And must see on YouTube new discovery: Rotation to Sun by its materialistic particles rays.
- Read in detail the discovery claim MATERIALISTIC UNIVERSE on website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)
- Please reply that why above stated discovered and claimed facts are not correct. E-mail: [ramesh\\_varma@newtonugeam.com](mailto:ramesh_varma@newtonugeam.com)

# Initial part of the Big Bang theory challenged

Origin of the Universe from a pin-head sized dense mass challenged for false acceptance  
by Ramesh Varma (India)

## Cosmologists, wake up from your mind set:

The following stated facts have **falsified** accepted theory that Universe has emerged from a highly dense and hot mass of **dimension equivalent to a pin head**; although origin is from explosion and expansion from the biggest black hole ever formed surrounded by invisible matter.

Georges Lemaitre first noted in 1927 that an expanding Universe could be traced back in time to an originating **single point**. Cosmologists during 1960s falsified steady state theory and they accepted Big Bang theory which describes that how Universe expanded from an initial stage of high density hot mass equivalent to size of a pin-head.

### Explanation:

1. During the years 1927 to 1960s, cosmologists did not know as much as they know today about dimensions of the Universe. Now they know (understand) that there are more than 200 billion galaxies; each galaxy has about 100 billion stars; most stars have much more mass than our Sun; our Sun has mass  $2 \times 10^{27}$  tons. Besides stars; galaxies have planets and other objects. Black holes add their mass too.

Further, according to the cosmologists Universe has 90 percent invisible mass called by them as 'Dark matter', whereas above stated visible matter is only 10 percent (In other words invisible matter's mass is 9 times more than the mass of all above stated visible matter of the Universe). Now, they can see far off galaxies too which are billions light years away through James Webb Space Telescope.

**Question to answer:** Is it possible that above stated visible and invisible matter of the Universe could ever have remained compact/compressed to a pin-head size before explosion and expansion?

**Answer by the Challenger:** It is a biggest joke with Science. Due to mind set and some other reasons beyond explanation cosmologists still beat the drum that Universe originated from highly dense mass equivalent to a pin-head.

2. Matter of any density and of any size cannot exist if it has absolute no pressure over it. So, speculated high density Universe matter that too of size equivalent to a pin head could never have existed.

**Example:** In the vacuum metalizing chamber; atoms of molten matter lose their mutual bond and evaporate to get deposited on colder object.

Water boils (evaporates) at low temperature if pressure over it is reduced.

Human body (or bio life) exists/works due to air (oxygen) inside of our body which has an outside air pressure. If human is put in a vacuum chamber death within minutes is sure and if instant vacuum is created, body parts which have trapped air would burst. Under similar principle; subatomic particles (or white matter\*) in an atom exists/works due to outside space's white matter pressure. Under absolute nothing outside pressure visible matter (or atom) of any density and of any dimension cannot exist.

(\*White matter: white matter is the invisible matter in the space released by the stars and other celestial bodies by losing their mass which has been falsely understood by the cosmologists as dark matter).

Visible matter over the Earth or in the Universe exists because it has pressure over it by the invisible matter (white matter).

3. Universe is expanding; a moment would come when pressure of white matter over visible matter would be reduced to a critical level resulting to transform all the visible matter to white matter; leading to an end of the visible Universe.

Due to decreasing white matter pressure; with the passage of time

black holes formed would explode earlier at lower mass limit and a stage would come when there would be no black hole too; it would be all white matter.

4. After trillions and trillions of years invisible white matter which was going outwards would reverse the trend due to gravity (*one grain or the particle tilts the balance resulting to reverse the trend*). Stated phenomenon would again form a biggest ever black hole at the centre of the Universe. Big black hole would grow bigger from white matter, whereas pressure over it by the remaining white matter would keep on decreasing with the result a critical stage would develop for its explosion and subsequent expansion. After explosion its matter would expand like the cosmologists have understood now.

After preliminary explosion of the biggest black hole; next black holes formed from the exploded matter would explode at smaller mass due to ever decreasing white matter pressure over them.

### 5. Temperature factor:

Compressed (denser) gas on its expansion (on becoming less dense) cools. Hot dense mass having temperature billions of degree cannot exist; it would evaporate due to absolute no pressure over it. How and under which law of Physics densest mass speculated with dimension of a pin-head at its expansion (on becoming less dense) would have gained temperature of billions of degree? Please explain.

Whereas, formation of 'Universe originating biggest ever formed black hole' from white matter suggests that as black hole grew bigger and further bigger; it gained temperature at its centre before explosion and subsequent expansion. The stated black hole would have attained temperature of billions or trillions degree at its centre due to high compression by the immense gravity and pressure over it by the remaining white matter.

(Some Scientists are of the opinion that supermassive black holes are extremely cold inside but as per the latest finding some Scientists say that black holes are actually ultra hot balls of fire inside. If supermassive black hole is cold inside then highly dense mass equivalent to pin head must be million times colder than the supermassive black hole due to (i) High compactness of sub atomic particles or the white matter; (ii) mass having no outside pressure over it and (iii) no source of heat from outside thus Universe was the coldest beyond imagination. Whatsoever is actual, formation of Universe from biggest ever formed black hole has its upper hand).

### 6. Conclusion:

Big Bang Theory suggests that expanding Universe would find an end forever and ever because matter of the Universe can never again be compacted back to a pin head for its reformation. Nature is not foolish that it would make such a Universe which meets its end.

Mass of the Universe is constant. Universe has no end or the beginning; its matter oscillates between formation of visible Universe from invisible white matter and disintegration of visible matter to white matter and so on. Visible Universe always originates from a singularity dense matter i.e., from a biggest ever formed black hole.

At extreme end shell of the Universe; white matter pressure would be too low that it would not allow atoms (or white matter) to form. The stated factor seals the limit of visible Universe though it may be extremely vast.

Though there is no age of the Universe but age of the present visible Universe can be considered the same as calculated by the Scientists i.e., 13.8 billion years.

#### Question for decisive answer:

Which of the two (World's or Challenger's) understanding has the upper hand and why? Please answer.

Above stated discovery claim is only a fraction of the total discovery claim over subjects Astronomy (formation and working mechanism of solar system and other celestial bodies based over materialistic particle properties of the rays) and Physics (Invisible states of the matter and true physical properties of the light and other kinds of the rays). Visit website: [www.newtonugeam.com](http://www.newtonugeam.com)

E-mail: [ramesh\\_varma@newtonugeam.com](mailto:ramesh_varma@newtonugeam.com)

Postal address: True Astronomy and Sciences, Village Jallah, Panchkula (Haryana) India.